तेज साप्ताहिक मनोरंजन टॅक्स १ रुपया
दीवाना
3-79

चिल्ली लीला

अरे यह क्या है? इसमें तो लड्डू हैं वह भी सख्त और बॉसी? इसने तो मुझे टीवी देने का वादा कर रखा था। मैं अभी इससे पूछता हूं। ऐसे वक्त पर चुप नहीं रहना चाहिये! लोग कितने बेईमान हो गये हैं!

FROM CHILLI

चौधरी साहब, आपने जरा गलत सुना मैंने टीवी थोड़े ही कहा था? मैंने तो टी. बी. कहा था! ये सारे लड्डू मैंने सेनिटोरियम भेज कर टीवी के किटाणु इनमें इन्जैक्ट करवाये हैं! इसे खाले तुझे जरूर टीबी हो जायेगी मैंने टीबी देने का वादा किया था न!

दीवानी चिपकी काटिये और चिपकाइये

सावधान!

इस बाथरूम में राजनारायण ने

गुप्त कैमरे फिट कर रखे हैं।

(पोस्टरों में नग्न चित्र छापने के लिए)

साप्ताहिक भविष्य

५ जुलाई से ११ जुलाई १९७९ तक
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : यह सप्ताह तकरीबन अच्छा रहेगा, जो काम पिछले दिनों अधूरे रह गए थे अब धीरे-धीरे पूरे होने लगेंगे, व्यय की अधिकता या धन की कमी परेशानी के कारण बनी रहेगी यात्रा सफल, लाभ में रुकावट।

वृष : यह सप्ताह आपके लिए विशेष अच्छा नहीं, व्यर्थ के झगड़ों से परेशानी अधिक रहेगी और चल रही समस्याएं अभी भी कायम रहेंगी, लाभ खर्च बराबर हों, सहयोग देने वाले अनेक मित्र मिल जायेंगे।

मिथुन : सेहत का विशेष ध्यान रखें और जहां तक सम्भव हो यात्रा न करें, दिलचस्प होने के साथ-साथ इस सप्ताह के दौरान कुछ नई पुरानी समस्याएं भी चलती रहेंगी, मित्र सहयोग देंगे, व्यापार में लाभ अच्छा होगा।

कर्क : अफसरों से परेशानी, नया काम न करें, स्वभाव में गुस्सा रहेगा, अन्य दिनों में मिले-जुले हालात चलेंगे, उलझनें अभी भी बनी रहेंगी फिर भी आपका आत्म विश्वास दृढ़ रहेगा, यात्रा में सुख।

सिंह : इस सप्ताह के अन्त तक आप ऐसा महसूस करेंगे जैसे कि आप किसी भारी संकट में पड़ने से बच गए और भाग्य ने भी आपका पूरा साथ दिया है, कामकाज में सुधार होने लगेगा, आमदनी अच्छी होगी।

कन्या : आर्थिक तंगी महसूस होगी फिर भी आपके काम बनते रहेंगे, और हालात भी आपके नियन्त्रण में ही चलेंगे, लाभ पहले समान ही होगा, कोई बिगड़ा काम बन सकता है, यात्रा हो तो सफल रहेगी।

तुला : भाग्य साथ देता रहेगा, और कोई अप्रिय घटना होते-होते बच जायेगी, घरेलू परेशानियों के कारण कामों में कुछ अड़चन परन्तु परिश्रम करने पर लाभ होता रहेगा, यात्रा सफल परन्तु सावधानी से करें।

वृश्चिक : कोई अप्रिय घटना या बुरी सूचना मिलने की शंका है, व्यय बढ़ेगा, अन्य दिनों में शुभ-अशुभ मिश्रित फल प्राप्त होंगे, रुके हुए कार्य बनेंगे और रुका हुआ पैसा भी मिलने की आशा है, परिवार में सुख।

धनु : पिछले सप्ताह की तुलना में यह सप्ताह कहीं अधिक अच्छा रहेगा, परिश्रम करके अच्छा लाभ प्राप्त किया जा सकता है, विरोधी पक्ष भी कमजोर रहेगा, यात्रा अचानक ही होगी, व्यापार सुधरेगा।

मकर : यह सप्ताह आपके लिए संघर्ष और कई तरह के उतार-चढ़ाव लेकर आया है, स्थायी कामधन्धों से लाभ यथार्थ होता रहेगा, व्यर्थ की योजनाओं पर व्यय अधिक, सफलता भी मिल जावेगी, व्यय अति अधिक।

कुम्भ : यह सप्ताह आपके लिए अच्छा है, अनेक समस्याओं का समाधान हो जावेगा, और हालात में भी सुधार होने लगेगा, परन्तु नई योजना अभी आरम्भ न करें तो अच्छा है, ऋण सम्बन्धी कामों में परेशानी रहेगी।

मीन : घरेलू कलह के कारण परेशानी, कामों में अड़चन पड़ेगी, व्यय अधिक होगा, अन्य दिनों में भी हालात संघर्षमय चलेंगे फिर भी प्रयास करने पर सफलता मिलती रहेगी, किसी जटिल समस्या से छुटकारा मिल जावेगा।

आपके पत्र

मैं काफी अरसे से दीवाना पढ़ता आ रहा हूँ। दीवाना का नया अंक पाया। इतना पसन्द आया कि पढ़कर दिल झूम उठा। सिलबिल-पिलपिल व मोटू-पतलू दिल को भा गए। कहानी झोंपड़ी और महल, बन्द करो बकवास व मदहोश भी रोचक लगे। कुल मिलाकर यह दीवाना अंक बहुत ही बढ़िया था। अगर आप 'भारत के पक्षी-एलबम' सीरीज के पक्षी को रंगीन कर दें तो बहुत अच्छा होगा। अगले अंक के इन्तजार में।

विनोद बन्धु—पपरोला (हि० प्र०)

दीवाना का नया अंक २० पढ़ा। मोटू पतलू, काका के कारतूस, सर तप गया बनाम कर्तव्य, सांप और बम, परोपकारी, स्तम्भों का जवाब नहीं। नये धारावाहिक उपन्यास ठोकर की लेखिका संगीता को शुभ कामनाएं।

तिलकराज अरोड़ा—खुर्जा (उ० प्र०)

दीवाना का अंक २० मिला, चिल्ली को टायर में बैठा देखकर हसीं आ गई। पंचतंत्र, मोटू-पतलू, बन्द करो बकवास और परोपकारी बहुत अच्छे लगे।

कृपा करके फैंटम के पृष्ठ बढ़ा दीजिए, ठोकर और फिल्म पैरोडी अपनी जगह ठीक रहे।

जयकिशन—उल्हासनगर

'दीवाना' का अंक १८ पढ़ा। बड़ा ही हास्यप्रद रहा। वास्तव में 'दीवाना' ने हास्य पत्रिका के रूप में सब पत्रिकाओं को पछाड़ दिया है। इस अंक में कहानी 'बेचारे मौसा जी' काफी हास्यप्रद लगी। और काका के उत्तर तो इतने हास्यप्रद रहे कि हंसी रोकने पर भी नहीं रुक पाती। इतनी शिक्षात्मक और हास्यप्रद पत्रिका के लिए मेरी शुभ-कामनाएं। इस अंक में मुझे पिलपिल-सिलबिल और मोटू-पतलू के कारनामे पढ़कर हंसते-हंसते पेट में बल पड़ गये। अगर आप अपनी पत्रिका में एक पेज 'चाचा चौधरी' को भी दें तो यह और भी हास्यप्रद हो जायेगी।

सुनील कुमार—पहासू (बु० शहर)

दीवाना अंक २० दिनांक ६ जून को प्राप्त हुआ। बाहर के कवर पर दना चिल्ली का चित्र तथा उसका अर्थ बहुत ही अच्छा लगा। आज की यथार्थ स्थिति का सुन्दर चित्रण किया है इस चित्र में। परमानेंट श्रोता व बजट (ले०—हुड़दंग नगीनवी) भी बहुत अच्छा लगा। शेष सब हमेशा की तरह ही श्रेष्ठ थे। आशा है कि आप इसी प्रकार की सामग्री देते रहेंगे।

देवेन्द्र बालिब—ग्वालियर

मैं आपकी पत्रिका 'दीवाना' को बहुत ही चाव से पढ़ता हूँ। 'दीवाना' अंक २० मिला। मुख पृष्ठ पर चिल्ली को टायर के अन्दर देखकर मुझे काफी हँसी आई, विशेषकर सर तप गया, ठोकर, मोटू-पतलू, सांप और बम, बात-बे-बात की, परमानेन्ट श्रोता, बजट एवं फैण्टम काफी पसंद आए।

सत्यपाल बधावन 'कुंक' 'फतरासगढ़'

मुख पृष्ठ पर

मैं जमाने से नहीं हूँ
मेरे दम से है जमाना
मेरे करिश्मे हैं निराले
सारी दुनिया ने है माना।
कोई काम नहीं है मुश्किल
तुम भी करके देखो,
सीधी लगे परछाई
जरा तुम हिल कर देखो॥

अंक : २४, ५ जुलाई से ११ जुलाई १९७९ तक
वर्ष : १५

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाहीः २५ रु० वार्षिक ४८ रु० [illegible]

अशोक शर्मा, अश्वनी चोपड़ा, मोगा

प्र० : जीवन अधूरा कब कहलाता है ?

उ० : गायक के बिना, जैसे सूना तानपूरा है,
जीवन संगिनी के बिना, जीवन अधूरा है ।

जफर अली रफीक मंजिल, मुरादाबाद

प्र० : मंदिर-मसजिद में जाते समय जूते बाहर उतारते हैं तो महबूबा के दिल में जाने से पहिले जूते कहां उतारें ?

उ० : दिल में घुसते वक्त, जूते हाथ में लेजाइए,
रास्ते में रोके कोई, काम में तब लाइए ।

आलोक गुप्ता, खोग्रा बाजार, कानपुर

प्र० : काकी बेलन दिखाकर, मार रही फटकार,
फिर भी कविता लिख रहे, क्या है इसमें सार ?

उ० : बेलन दर्शन से खुले, काव्य-ज्ञान के पट,
चले लेखनी फटाफट, कविता बनती झट ।

श्याम महेश्वरी, फारबिस गंज (बिहार)

प्र० : आप सुबह उठकर किसका नाम लेते हैं ?

उ० : राधा राधा रटत ही, व्याधा होंय समाप्त,
काकी-काकी जपें तो, 'काफी' होती प्राप्त ।

राधेश्याम गोयल, खेतड़ी नगर (राज०)

प्र० : दिल की धड़कन और घड़ी की टिकटिक में क्या अन्तर है ?

उ० : प्रेमपार्क में मिलन का, कर बैठे ऐंगेज,
टिकटिक पीछे रहगई, धड़कन हो गई तेज ।

दिनेश कुमार जैन, बन्दा-बेलई (सागर)

प्र० : हेमा मालिनी कौन सा साबुन लगाती है ?

उ० : जो साबुन की फैक्टरी, साबुन दे दे मुफ्त,
उसे लगाने में उन्हें, आता होगा लुत्फ ।

दिवाकन्त झा, फुसरो

प्र० : करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान...लेकिन लाख कोशिश करने पर भी, कोयला सफेद नहीं होता?

उ० : कोशिश व्यर्थ न जायगी, दिल में रख उमेद,
जलजाए जब कोयला, होगी राख सफेद ।

ओमप्रकाश अग्रवाल, नंदुरबार (महाराष्ट्र)

प्र० : काकी से आप डरते हैं, फिर भी उसके जाल में फंसकर शादी क्यों की ?

उ० : फसने में भी मजा है, डरने में भी स्वाद,
हंसते-हंसते पा रहे, काकी का परसाद ।

एच. पी. वैष्णव, कनेरा (राजस्थान)

प्र० : साइकिल का ब्रेक हाथ में, मोटर का पैर में, तो हसीना का ब्रेक ?

उ० : रुक जाएगी हसीना, मार आंख का ब्रेक,
डौन्ट केयर, पिट जाइए, होय खोपड़ी क्रेक ।

सुरेन्द्र कुमार किस्कू, भागलपुर

प्र० : काकाजी, पढ़ने के बजाए, घूमने के लिए मन करता है, क्यों ?

उ० : भ्रमण-रमण के साथ ही, चले लिखत-पढ़ंत,
मंत्री नेता घूमते, घूमें सन्त-महन्त ।

सुधीर श्रीवास्तव—मुजफ्फरपुर

प्र० : मैंने सपने में आपको 'हेमा-हेमा' चिल्लाते हुए देखा है, क्या आप हेमामालिनी से इतने प्रभावित हैं ?

उ० : माताजी की मृत्यु पर, हुआ ब्राह्मण भोज,
हे-मां, हे-मां कह रहे, रो-रोकर उस रोज ।

सुरेन्द्रसिंह 'बबलू' मोरे, मनीपुर

प्र० : आपने यह कवि विद्या कहां से सीखी ? हम भी सीखना चाहते हैं ।

उ० : काकी से हमको मिला, काव्य कला का ज्ञान,
कवि बनने को हाथरस, आ जाओ श्रीमान् ।

जोगिन्द्र नागपाल, रुद्रपुर (नैनीताल)

प्र० : मानव की बुद्धि में अधिक शक्ति है, या भक्ति और तप में?

उ० : चलते मानव बुद्धि से, जीवन के सब खेल,
बिना बुद्धि के भक्ति-तप, हो जाते हैं फेल ।

टाइगर परुथी, फीरोजपुर (पंजाब)

प्र० : लड़का जानता है कि एक दिन मेरी शादी हो ही जाएगी, फिर भी लड़कियों के पीछे क्यों भागता है ?

उ० : भँवरा रस का लालची, कलियों पर मँडराय,
ना जाने कब कौनसी, फन्दे में फंस जाय ।

राजकुमार कासलीवाल, डीमापुर (नागालैंड)

प्र० : कोयला के पास बैठने से कालोंच लगती है, यह कहां तक ठीक है ?

उ० : बिना जलाए कोयला, पके न रोटी दाल,
लग जाए कालोंच तो, साबुन से धोडाल ।

प्रदीपकुमार जोशी, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)

प्र० : इच्छापूर्ति कराने का कोई उपाय बताइए काका ?

उ० : करदी जब हड़ताल तब, मानी यह सरकार,
पुलिस मांग के सामने, डाल दिए हथियार ।

केवल प्रकाश 'दुआ', काशीपुर (नैनीताल)

प्र० : आपको अकेलापन कब अच्छा लगता है ?

उ० : गप्प-शप्प चलती रहे, काकी का सिद्धांत,
काका जब कविता लिखें, तब चाहें एकांत ।

आनन्दीलाल श्रीवास्तव, शाहदरा-दिल्ली

प्र० : सेल टैक्स आन्दोलन पर आपकी प्रतिक्रिया ?

उ० : बड़े साब से कह रहे, बाबू लपकानन्द,
सेलटैक्स हटजाय तो मौज-मजे हों बन्द ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

लूटो जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए, १००१ मज़ेदार पुरस्कार!
खाली जगह की संख्या बताओ!
3 6 9 2 5 8 4 ? 10
जल्दी करो!
प्रवेश-पत्र पहुँचने की अंतिम तिथि : १०-८-१९७९
अपना उत्तर, कॅड्बरिज़ जेम्स के एक बड़े खाली प्लास्टिक पैकेट (३० ग्राम) के साथ भेजो। पहले १००१ सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा।
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेजी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो।
Cadbury's
MILK CHOCOLATE
GEMS
प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजोः
"Fun with Gems", Dept. No. B-33
Post Box No. 56,
Thane 400 601, Maharashtra.
चॉकलेट से भरे रंगीन कॅड्बरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-263 HIN
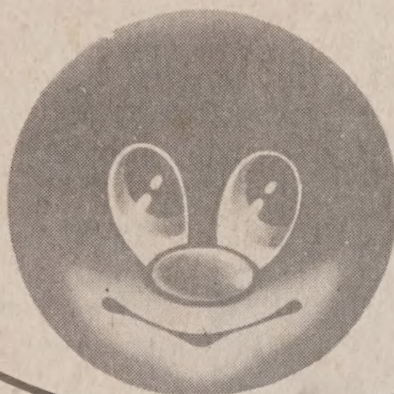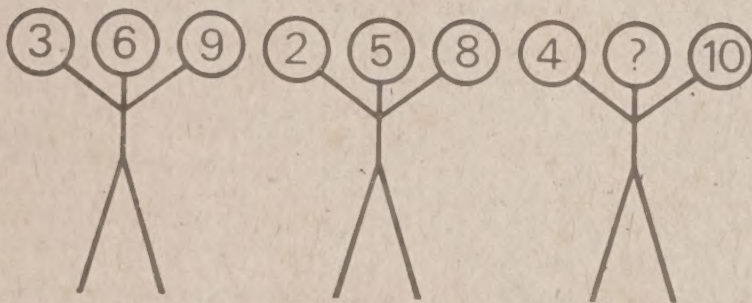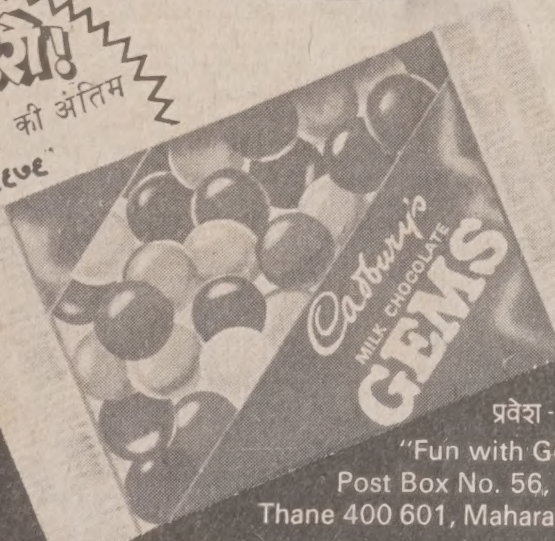
राज को मार गोली कृत

जा निर्दोष मन

(बनाम: जानी दुश्मन)

जीवित रहने वाले कलाकार

सूनीलात, शत्रूबिन जीना, रोनाराय, लेखा, बिंड़िया,

मरने वाले कलाकार जूते अन्दर, सब्जी कुमार, चिंटू सिंह, रोता बेमुराद सारेगा.

हा हा हा!!! फ़िल्मी दुनिया में मुझ से ज्यादा उमर वाले अब तक हीरो बने फिरते हैं फिर मैं किस खेत की मूली हूँ!
बिलकुल ठीक कह रहे हो भैया, फिल्मों में भला उमर वुमर कौन पूछता है! फिल्म 'वारिस' मे मैं जूतेअन्दर की छोटी बहन थी और अब उसकी हीरोइन!

क्या? यह तो महा पाप हो गया! अब प्रेम नाथ तुझे शिव शंकर के मंदिर में बली चढ़ा देंगे!
तो वहाँ जो डोलियों में से दुलहन गायब होती हैं वह सारी बली चढ़ा दी जाती हैं!

कुछ समझ में नहीं आता है क्या चक्कर है? एक पुजारी एक राक्षस के हाथों एक निर्दोष दुल्हन को सौंप देता है यह कहकर कि शिव शंकर बली स्वीकार करो!
अच्छा? फिर तो वह पुजारी ही सबका हत्यारा है! उसे तो उसके कर्मों की सज़ा मिलनी चाहिए!

सज़ा तो हम दे रहे थे पर क्या करें? शंकर भगवान ने साक्षात नाग के रूप में प्रगट होकर उनके निर्दोष होने का सुबूत दे दिया!
कमाल है? क्या निर्माताओं को कोई तुक की कहानी नहीं मिलती जो ऐसे बे सर पैर की कहानी लेकर फ़िल्म बनाने बैठ जाते हैं!

मैं तो समझता था कि सिर्फ़ मैं ही अंधा हूँ! लेकिन आज मुझे पता चला कि मैं अंधा नहीं हूँ! तुम इतने बड़े बड़े समझदार सितारे हो पर तुम लोगोंने भी स्टोरी बिना देखे सुने ही कांट्रेक्ट साईन कर लिया!
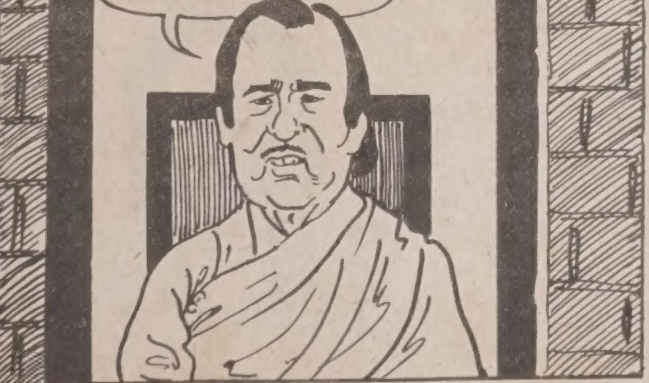
भैये, अगर स्टोरी विस्टोरी के चक्कर में पड़े न, तो समझो छुट्टी! अरे अच्छी स्टोरी मिलती कहां है आजकल! वैसे भी बुढ़ापा आ रहा है, फ़ीफ्टी सिक्स्टी की स्पीड से, जल्दी जल्दी अपने आप को कॅश करा लेना चाहिए!

वो राक्षस रोना राय को भी डोली में से उठा लेता है और मारने लगता है, पर अपनी फ़िल्म का हीरो सूनी भात उसे बचा लेता है! जब वह उस राक्षस के सर से मुखौटा उतारता है तो उसे और कोई नहीं गांव का ठाकुर सब्जी कुमार ही मिलता है।
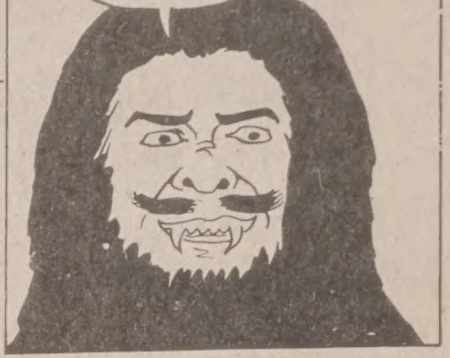
होश नहीं रहता था? जब अपनी लड़की की डोली निकली तब कहां से होश आ गया था?

सिंपल, यार सिंपल! वह तो मैं सिर्फ़ लाल जोड़ा देखकर ही भड़कता हूं न, सो मैंने उसे लाल जोड़ा पहनने से मने कर दिया था!

दीवाना-कैमल
रंग प्रतियोगिता
निःशुल्क प्रवेश

पुरस्कार जीतिए:

कैमल-पहला इनाम ३० रु.
कैमल-दूसरा इनाम २० रु.
कैमल-तीसरा इनाम १० रु.
कैमल-आश्वासन इनाम ५
दीवाना-आश्वासन इनाम ५
कैमल-सर्टिफिकेट १०

केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पत्ते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२
परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम.. उम्र ....

पता ....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: ४-८-१९७९

CONTEST NO. 10

VISION

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।
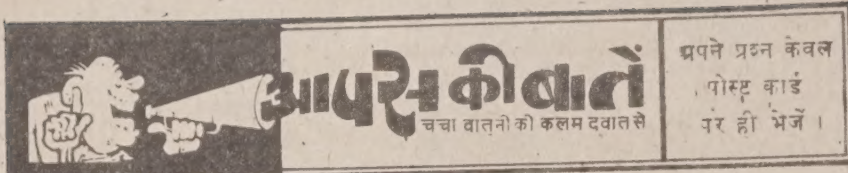
जितेन्द्र नागपाल—गाजियबाद : चाचा जी, यदि गुस्सा आ जाये तो क्या करना चाहिये ?

उ० : यह देख लेना चाहिये कि जिस दीवार के पास आप बैठे हैं, वह अधिक मजबूत है, या आपका सर ?

सुरेश कुमार बुधवानी—रायपुर : चाचा जी, किसी मनुष्य के लिये सबसे बड़ा बोझ क्या होता है ?

उ० : आप मनुष्य के बोझ की बात करते हैं, आज का मनुष्य तो धरती पर बोझ है।

सुभाष बतरा—करनाल : यदि आपको भारतीय क्रिकेट टीम का कप्तान बना दिया जाए तो कैसा रहेगा ?

उ० : गुटबंदी से बचकर क्रिकेट टीम "यतीम" होने से बच जाएगी। और हम मुकाबला करने वाली टीम के पीछे ऐसे पंजे झाड़ कर पीछे पड़ेंगे कि उसके छक्के छूट जाएंगे।

मुन्ना बाबू विद्यार्थी—कानपुर : चाचा जी, शक्ल से आप मुझे सनकी किस्म के आदमी लगते हैं :

उ० : थैंक्यू वैरी मच। इस तारीफ के लिए धन्यवाद। सनकी सही, पर हम आपको आदमी तो लगते हैं।

चन्द्रशेखर गोस्वामी—हरिद्वार : चाचा जी, आपने चिल्ली लीला जैसा मनोरंजक स्तम्भ बन्द कर दिया है। क्या कारण है ?—

उ० : कारण कुछ भी नहीं, आप "चिल्ली लीला" के मजनू बन गये हैं तो हम चिल्ली लीला फिर शुरू कर देंगे।

शंकर लाल शर्मा—अलीगढ़ : मैं डाक्टर झटका से इलाज करवाऊं तो क्या कुछ लाभ होगा ?

उ० : बहुत लाभ होगा, उन लोगों को जो आपके बाद आपकी सम्पत्ति बांटेंगे।

ओम प्रकाश आर्य दिल्ली : चाचा जी, आज समय मनुष्य को धोखा दे रहा है या मनुष्य समय को ?

उ० : दोनों एक दूसरे की आँखों में धूल झोंकने में लगे हुये हैं।

सालिक हुसैन—खंडवा : चाचा जी, हमारे यहाँ भतीजा हुआ है। उसका नाम क्या रखें ?

उ० : आप हमारी तरह धर्म निरपेक्षता में और शहनशाह अकबर की तरह "दीने इलाही" में विश्वास रखते हैं, तो उसका नाम रखिये, "जार्ज हुसैन सिंह"।

अनिल गगनेजा—सहारनपुर : चाचा जी, प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि उसे आज नहीं तो कल यह दुनिया छोड़नी ही है, फिर वह अपनी दौलत पर घमंड क्यों करता है ?

उ० : प्रत्येक व्यक्ति के पास दौलत है ही कहाँ घमंड करने के लिये ? हमारा देश तो सपेरों और जादूगरों का नहीं, भिखारियों का देश है। और एक भिखारी अपने मांगने वाले कटोरे पर घमंड क्यों करता है, यह बात तो आज तक सी० आई० ए० के बड़े जासूसों की समझ में नहीं आई। आपकी और हमारी समझ में क्या आएगी ?

चन्द्रभान अनाड़ी—जबलपुर : मैं आपका शिष्य बनना चाहता हूं। क्या आप मेरे गुरू बनना स्वीकार करेंगे ?

उ० : जी हां, पर जैसे बिल्ली ने शेर को अपना शिष्य बनाया था, तो सब कुछ सीखने के बाद शेर ने पेड़ पर चढ़ना सीखने की जिद की थी, हमने आपको पेड़ पर चढ़ना भी सिखा दिया, तो आप पेड़ से लटकना तो खुद ही सीख जायेंगे ?

मामराज अग्रवाल—धोरी : यदि मोटू, पतलू, डा० झटका, घसीटा राम, चेला राम, पिलपिला मिलबिल, परोपकारी, मदहोश और चाचा बातूनी को क्रिकेट बोर्ड क्रिकेट टीम में ले ले और चिल्ली को उसका कप्तान बना कर विश्व कप क्रिकेट मैच के लिये भेजे तो क्या यह टीम विश्व कप जीत लायेगी ?

उ० : अवश्य जीत लाएगी। पर हमारा क्रिकेट बोर्ड ऐसी टीम क्यों भेजने लगा ? वह तो ऐसी टीम का चुनाव करता है जो विश्व कप तो क्या एक कप चाय का भी न जीत सके।

श्याम कुमार जायसवाल—इन्दौर : क्या आपने भी कभी किसी से प्यार किया है ? यदि किया है, तो उसका परिणाम क्या हुआ ?

उ० : जी हां, एक ही बार किया था। हमें उसकी आँखें बहुत पसंद थीं। पर विवाह पूरी औरत से करना पड़ गया, वह है आपकी चाची।

राजू बिलारी : चाचा जी, क्या आप किसी चुनाव में खड़े हुये हैं ?

उ० : अब तक तो हमने इस चक्कर में अपनी मिट्टी खराब नहीं होने दी, क्योंकि हमें पता है, जो चुनाव में खड़े हुये हैं, अपनी जिद पर अड़ हुए हैं, उनमें बहुत कम हैं, जो बड़े हुए हैं, जिन पर चाँद सितारे जड़े हुये हैं। बाकीयों को देखो तो मिट्टी में पड़े हुये हैं। कुछ पर अंडे सड़े हुए हैं, कुछ धरती में गड़े हुये हैं, कुछ सूली पर चढ़े हुए हैं। कुछ पर अंडे सड़े हुये हैं। अब बताइये हमने अच्छा ही किया था चुनाव से दूर रह कर।

अरविन्द कुमार जैन दरहाई—जबलपुर : चाचा जी, दीवाना का प्रकाशन कब शुरू हुआ ? आप यहाँ कब से हैं ?

उ० : पंद्रह साल पहले। तब हम जिस कुर्सी पर बैठे थे, उस पर आज तक चिपके हुए हैं।

ओमप्रकाश—दिल्ली : मैंने कई पत्र डाले। आपने किसी का उत्तर नहीं दिया। क्या चक्कर है ?

उ० : यूं कहिये क्या घनचक्कर है ? इस पत्र की तरह आपने सभी पत्रों में प्रश्न कोई नहीं पूछा होगा। हम उत्तर क्या देते ?

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

परोपकारी
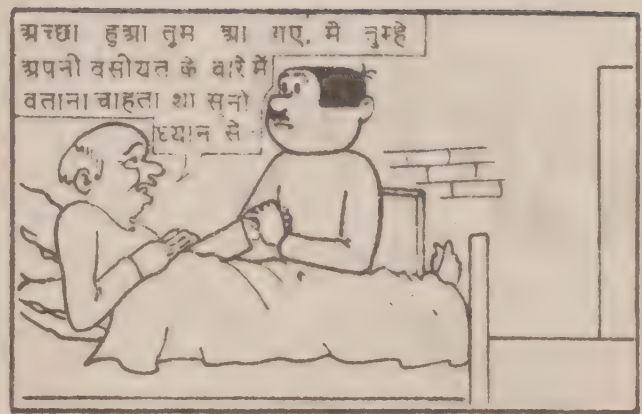
बात-बेबात की

परीक्षा में डेढ़ महीना शेष था और फीस जमा होने के लिए केवल एक महीना··· पिताजी ने उसे विश्वास दिलाया था कि फीस जरूर जमा हो जाएगी···इसलिए वह परिश्रम से स्टडी कर रहा था···उसने सोचा था इण्टरमीडिएट के बाद वह कहीं काम कर लेगा—और फिर जब हालात कुछ सुधर जाएंगे तो वह फिर पढ़ना शुरू कर देगा—यह सोचकर वह संतुष्ट हो गया था।

उन दिनों मोहन और सुरेन्द्र से भी वह कम मिलता था···सरिता भी पढ़ने नहीं आ रही थी क्योंकि विनोद का अन्तिम वर्ष था और वह जानती थी कि अगर वह सरिता को ही पढ़ाता रहा तो स्वयं कब पढ़ेगा···सरिता का तो पहला वर्ष था और स्वयं भी स्टडी कर सकती थी···हाई स्कूल उसने फर्स्ट डिवीजन में पास किया था और इसके लिए उसको छात्रवृति मिलती थी।

दोपहर का समय था···विनोद कालिज से आकर बैठा ही था कि सरिता आ गई··· लेकिन उसके हाथ में कोई पुस्तक नहीं थी जिससे स्पष्ट था उससे पढ़ने नहीं आई···।

'तुम्हारी स्टडी कैसे चल रही है?' विनोद ने मुस्करा कर पूछा।

'यही बात मैं तुमसे पूछने आई हूं।'

'संतोषजनक···'

'अपना भी यही हाल है—फीस जमा होने का क्या हुआ?'

'पिताजी ने प्रवन्ध करने का आश्वासन तो दिलाया है।'

'तब ठीक है···मैं तुम्हारी ओर से चिंतित थी।' इतने में फूलवती वहां आ गई···विनोद ने ऐसे अनुभव किया कि फूलवती सरिता को बड़ी जलन से देख रही थी। सरिता ने उसकी ओर देखा नहीं और विनोद की एक पुस्तक के पन्ने पलटने लगी।

'विनोद, तुम्हारी परीक्षा में कितने दिन रह गए हैं?' फूलवती ने विनोद से पूछा।

'डेढ़ महीना···।'

'और फिर भी उस ओर से तुम निश्चिन्त बैठे हो, तुम्हें तो एक मिनट भी नष्ट नहीं करना चाहिए···देखो तो तुम्हारे पिताजी कितने कष्टों से तुम्हें पढ़ा रहे हैं।'

'परामर्श का धन्यवाद···लेकिन आपका विचार गलत है, मैं रात को तीन-तीन चार-चार बजे तक जागकर पढ़ता हूं।'

'रातों को इतनी देर जागने से स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है···यह समय होता है स्टडी का और इसे तुम बातों में गंवा रहे हो।'

'इस भली सलाह के लिए धन्यवाद।'

'और सुनाओ···।' फूलवती सरिता से बोली, 'तुम पढ़ने नहीं आती हो आजकल?'

'मुझे अपनी पढ़ाई से अधिक विनोद की स्टडी का ध्यान है···।' सरिता ने बिना उसकी ओर देखे उत्तर दिया।

'इसका मतलब हुआ तुम विनोद की हमसे बढ़कर शुभचिन्तक हो।"

'सच्ची शुभकामनाएं भावना की कसौटी पर परखी जा सकती हैं।'

'अर्थात् हमारे मन में विनोद के लिए सच्ची शुभकामना नहीं।'

'यह अपने ही मन से पूछो।'

'मैं पूछती हूं तुमने यह कैसे अनुमान लगा लिया कि विनोद के प्रति मेरी कामनाएं शुभ नहीं।'

'अगर तुम्हारे मन में सच्ची शुभ-कामनाएं होतीं तो इस समय विनोद के पिताजी केवल दो सौ रुपये के लिए परेशान न होते···।' सरिता ने गम्भीरता से कहा।

'उफ···फो, एक दो टके की छोकरी का इतना साहस कि हम पर आवाज कैसे···।'

'जवान सम्भाल कर बात करो···।' सरिता ने उठते हुए कहा, 'यह दो टके की छोकरी इतनी कृतघ्न नहीं—लेकिन तुम दो लाख की छोकरी होकर भी कृतघ्न हो··· और सुनो···तुम आवारा भी हो···तुम जैसी लड़कियों से तो मैं बात करना भी अपमान समझती हूं।' यह कहकर सरिता तेजी से कमरे से निकल गई।

'मैं समझती हूं यह आग तुम्हारी लगाई हुई है वरना इस नीच को इतना साहस न होता कि मुझे आवारा कहती—मैं जानती हूं तुम्हें हमारा यहां रहना पसन्द नहीं···कल ही मैं उनसे कहकर मकान का प्रबन्ध कर लूंगी···' फिर वह बड़बड़ाती हुई उठ कर बाहर चली गई।

विनोद गुमसुम वहीं बैठा रह गया··· उसकी तो समझ में भी नहीं आया था कि यह एकाएक हो क्या गया। वह तो तब चौंका जब फूलवती चली गई···तब उसे ध्यान आया कि सरिता अप्रसन्न होकर चली गई···उसे फूलवती पर बहुत क्रोध आया और वह पांव में चप्पल डाले सीधा सरिता के घर पहुंचा। सरिता बैठी पढ़ रही थी··· मां कहीं दिखाई नहीं दी···शायद रसोई में हों···विनोद सीधा सरिता के पास जा खड़ा हुआ···सरिता ने उसे देखा और चौकी झाड़ते हुए बोली—

'आओ···बैठो···।'

'मुझे खेद है सरिता···।' विनोद बैठते हुए बोला।

'किस बात का?' सरिता ने बैठते हुए आश्चर्य से पूछा।

'फूलवती की अशिष्टता पर मैं उसकी ओर से क्षमा मांगने आया हूं।'

'पागल हो।' सरिता ने गम्भीरता से कहा, 'मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है··· तुम मेरे दोस्त हो और रहोगे।'

'लेकिन तुम अप्रसन्न होकर एकाएक क्यों चली आई?'

'इसलिए कि मैं नहीं चाहती थी कि बात बढ़ जाए···और तुम जानते हो···सच बोलने से मेरी जबान सूली पर भी नहीं चूकेगी···घर तुम्हारा है···चिंता मत करो··· घर आना थोड़े ही छोड़ दूंगी।'

विनोद के दिल का बोझ हल्का हो गया···वह उठकर चला आया—यह लड़ाई तो हो ही गई थी सरिता और फूलवती में लेकिन इसकी गहराई पर विचार करते हुए उसने सोचा था कि फूलवती के व्यवहार में डाह था—उसकी बातों में जलन थी जैसे वह उसका और सरिता का मिल बैठना पसन्द नहीं करती—तो क्या अब भी वह उसके बारे में सोचती है उसके मन में उसके प्रति प्यार है—? लेकिन नहीं—उसी के मन

ने कहा, फूलवती का व्यवहार प्रतिशोध की भावना पर आधारित था।

उसे याद था कि एक बार फूलवती उससे स्वयं लिपट गई थी और उसने विनोद को डिगाने का प्रयत्न किया था—लेकिन उसने अपने आपको इस पाप से बचा लिया था—और फुलवती की भावनाओं को ठुकरा दिया था···उसी का बदला अब वह लेना चाहती थी···उदार हृदय तो वह थी नहीं कि अतीत को भूलकर अपनी शिष्टता का परिचय देती···वह ओछे हथियारों पर उतर आई थी···।

फूलवती के प्रतिशोध की पहली कड़ी वह मुस्कराहट थी जो शादी के लिए आने पर रेल के डिब्बे से उतरते समय उसने फूलवती के चेहरे पर देखी थी···इसकी दूसरी कड़ी विनोद को दाखिले के लिए चिंता में देखकर मन में छिपे हर्ष की अनुभूति का होना था और तीसरी कड़ी सरिता और विनोद में खाई उत्पन्न करने का यह प्रयत्न था···इन्हीं विचारों में डूबा वह अपने कमरे में घुसा ही था कि मां आ गई—।

'यह सरिता क्यों लड़ गई है फूलवती से ?' मां ने पूछा।

'अकारण ही झगड़ा हो गया···आप तो जानती हैं सरिता साफगो लड़की है···।'

'लेकिन यह हुआ तो बुरा···फूलवती गुस्से में है···आते ही डाक्टर से अलग मकान ले लेने के लिए कहेगी।'

'तब मैं क्या करूं ?' विनोद ने कहा।

'उसे समझाओ बेटा···अगर इस प्रकार लड़कर चली गई तो सारा उपकार मिट्टी में मिल जाएगा···लोग कहेंगे कि बेटी दामाद को घर में रखना बोझ लगने लगा था कि लड़कर निकाल दिया।'

'जाने भी दो मां, वैसे ही कौन-से रिश्तेदार हैं जिन्होंने हमारे उपकार माने हैं···सब कृतघ्न निकले···एक और सही···।' विनोद ने कुछ कटु से स्वर में कहा।

'नहीं बेटा···ऐसा नहीं होना चाहिए तुम्हें मेरी सौगंध फूलवती को जाकर समझाओ।'

मां के सौगन्ध देने पर मन न चाहते हुए भी विनोद फूलवती के पास पहुंचा और बोला—

'फूलवती···सरिता मेरी दोस्त है···उसने तुमसे अशिष्टता की है···।' उसकी ओर से मैं क्षमा मांगने आया हूं।'

'सरिता तुम्हारी दोस्त है···और हम तुम्हारे कुछ भी नहीं···।' फूलवती का स्वर कांप रहा था।

'आप कोई न होतीं तो क्षमा मांगने क्यों आता ?'

'उसने मुझे 'आवारा' क्यों कहा ?'

'मैं नहीं जानता।' विनोद ने दबी जबान से कहा।

'नहीं···मैं जानती हूं···तुम ही सब बातें उससे करते रहते हो—तुमने प्रदर्शनी वाली घटना बता दी होगी···लेकिन बताओ···क्या प्रेम करना आवारापन है तो ठीक है मैं आवारा हूं।'

"क्या कह रही हो तुम ?'

'सच कह रही हूं विनोद···फूलवती की आंखें भर आईं, 'मैं अब भी तुमसे प्रेम करती हूं···सरिता को देखकर मेरे मन में ईर्ष्या की आग भड़क उठती है···मैं तुम्हें बचपन से चाहती हूं विनोद और यह चाहत जीवन के अन्तिम क्षणों तक रहेगी—मुझे लाख किसी डाक्टर से ब्याह दो···लेकिन मेरा दिल, मेरा शरीर, मेरा सब कुछ तुम्हारा है···।' फुलवती आगे बढ़ी और विनोद से लिपट गई।

विनोद ने फुलवती को धक्का देकर अलग कर दिया, 'यह मैं नहीं कर सकूंगा···तुम पराई अमानत हो···मैं इतना गिरा हुआ नहीं हूं।'

'विनोद ! तुमने नारी का प्यार देखा है···उसका प्रतिशोध नहीं देखा···फुलवती विषैले स्वर में बोली···फिर उसका स्वर कुछ कोमल हो गया, 'मेरे भावों को समझो विनोद···मैं तुम्हारी बांहों के बिना नहीं रह सकती···मैं कई दिनों से तुम्हें चिंता में देख रही हूं···मैं तुम्हारी सारी चिन्ताएं दूर कर दूंगी···मैं तुम्हें फीस के लिए रुपये दूंगी···आगे पढ़ने के लिए तुम्हारी सहायता करूंगी···भगवान के लिए मेरे भावों को समझो···।' वह एक बार फिर विनोद से लिपट गई।

विनोद ने पूरे बल से फूलवती को धकेल दिया और बाहर निकल गया। फूलवती एक चोट खाई विषैली नागिन के समान विनोद को जाते देखती रही।

वह दिन विनोद का बड़ी उलझन और भारी असमंजस में गुजरा···रात को वह स्टडी भी नहीं कर सका। लेकिन दूसरे दिन उसने थोड़ा सन्तोष अनुभव किया क्योंकि फूलवती के चेहरे पर उसने कोई विशेष भाव नहीं देखा—दूसरे दिन फिर वह पूरे परिश्रम से पढ़ाई में जुट गया···तीसरे दिन दोपहर को सरिता भी उससे मिलने आई···लेकिन फूलवती कुछ बोली नहीं—विनोद आश्चर्य में था।

समय बीतता गया और विनोद अपनी स्टडी में इतना व्यस्त रहा कि उसे फीस देने का ध्यान भी नहीं रहा और एकाएक वह चौंका तब फीस जमा करने में केवल एक दिन ही रह गया था···अब तक वह ऐसे संतुष्ट था जैसे उसने फीस जमा भी करवा दी हो—उसे यह भी पता नहीं था कि पिताजी इसके लिए क्या कर रहे हैं···? वह मां के पास गया और बोला—'मां पिताजी कहां हैं ?'

— शेष पृष्ठ ३६ पर

गम न कर मेरे भाई। मेरी सहानुभूति पूरी तरह तुम्हारे साथ है। मैं काला कुत्ता हूं, मेरे साथ भी अक्सर ऐसा ही होता है जैसा थमारे साथ होता है। यह सब भाई अपने-अपने कर्मों का फल है। लिखने वाले ने किस्मत में जो लिख दिया सो लिख दिया।

हमारे खंडारी ही ऐसे घटिया दर्जे के हैं कि उन पर कोई भरोसा नहीं किया जा सकता। कीकर के पेड़ में ग्राम लग सकते हैं लेकिन हमारे क्रिकेटर कभी काम नहीं ग्रायेंगे। ग्रब हम क्या करें? हमें इस जीवन से विरक्ति हो गयी है। हमारी मांग सूनी हो गयी। हरा-भरा संसार उजड़ गया। सपनों का महल ढह गया। गुड़ ऐसा गोबर हुग्रा कि खाद के रूप में काम ग्राने लायक भी नहीं रहा। ग्रब हम बैरागी हो गये हैं। हम तीनों कमंडल ग्रौर चिमटे उठा कर चारों तीर्थों की पैदल यात्रा कर जायेंगे ग्रौर बाकी के बचे-खुचे दिन काशी में तपस्या करेंगे।

ठहर चूहे! तू हमें गलत रास्ते पर ले जाना चाहता है। हम सन्यास क्यों लें? हमने कौन सी गलती करी है? गलती तो हमारे क्रिकेटरों की है जिनको खेलना नहीं ग्राता। टिप-टिप करते हैं। जैसे कर्जदार पठान को देखकर डर जाता है वैसे ही हमारे बल्लेबाज बम्पर से डरते हैं।
इन क्रिकेटरों ने हमारे देश में कितने करोड़ लोगों का दिल दुखाया है। इनसे बढ़ कर पापी कोई हो सकता है? हम इनसे जरूर बदला लेंगे। सारी जनता की तरफ से हम बदला लेंगे, जरूर लेंगे।

किसी को हमारी योजना मत बताना। हम थम को ग्रपना यार्ड़ी समझकर बता रहे हैं जब हमारी टीम इंगलैंड से वापिस ग्रायेगी तो हम भी एयर पोर्ट जायेंगे। मैं ग्रपने साथ यह ग्रेनेड ले जाऊंगा जैसे ही टीम उतरेगी......।
PSSSSSSS

...सबकी छुट्टी हो जायेगी, ये खंडारी जिन्दा रहने लायक नहीं हैं। जहां भी जाते हैं नाक कटा ग्राते हैं।
धमाका
सबके चिथड़े उड़ जायेंगे ग्रौर यमराज के पास ग्रपना स्कोर कार्ड बताते नजर ग्रायेंगे।
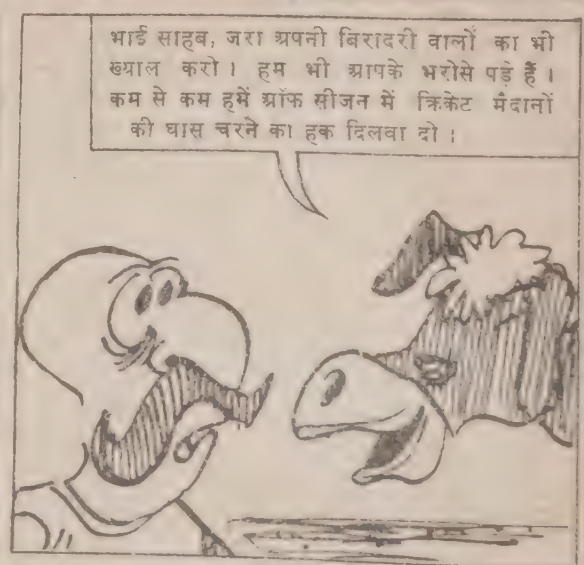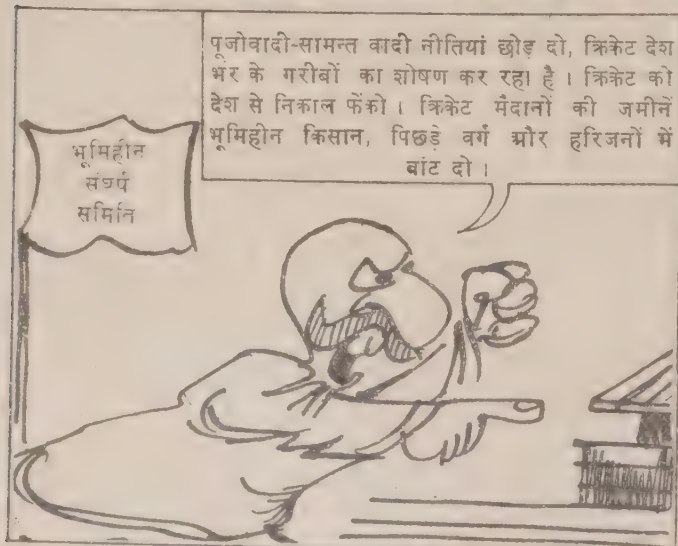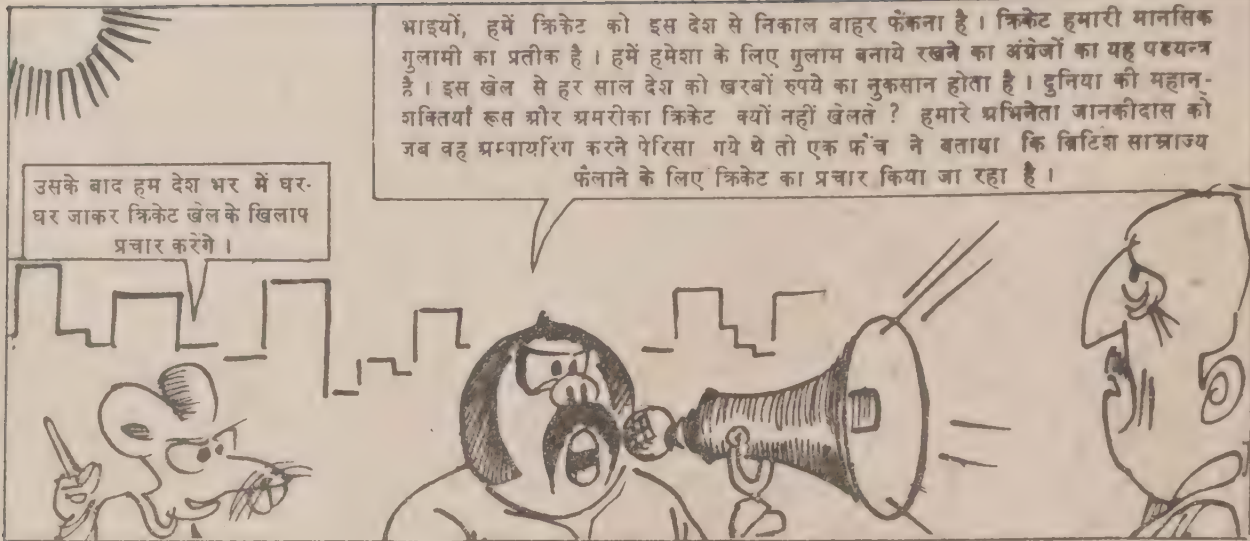
भाइयों, हमें क्रिकेट को इस देश से निकाल बाहर फेंकना है। क्रिकेट हमारी मानसिक गुलामी का प्रतीक है। हमें हमेशा के लिए गुलाम बनाये रखने का अंग्रेजों का यह षड्यन्त्र है। इस खेल से हर साल देश को खरबों रुपये का नुकसान होता है। दुनिया की महान-शक्तियां रूस और अमरीका क्रिकेट क्यों नहीं खेलते? हमारे अभिनेता जानकीदास को जब वह अम्पायरिंग करने पेरिस गये थे तो एक फ्रेंच ने बताया कि ब्रिटिश साम्राज्य फैलाने के लिए क्रिकेट का प्रचार किया जा रहा है।

उसके बाद हम देश भर में घर-घर जाकर क्रिकेट खेल के खिलाफ प्रचार करेंगे।

हम देश के सारे क्रिकेट स्टेडियम, बानखेड़े स्टेडियम, फिरोज शाह कोटला, चिपॉक, ईडन गार्डन और बंगलौर क्रिकेट एसोसियेशन ग्राऊंड की पिचें चुपचाप रात को जाकर खोद देंगे और उसमें हम देसी आलू बो देंगे! हमारे देश को रनों की नहीं आलुओं की जरूरत है।

भूख हमारी पहली समस्या है।
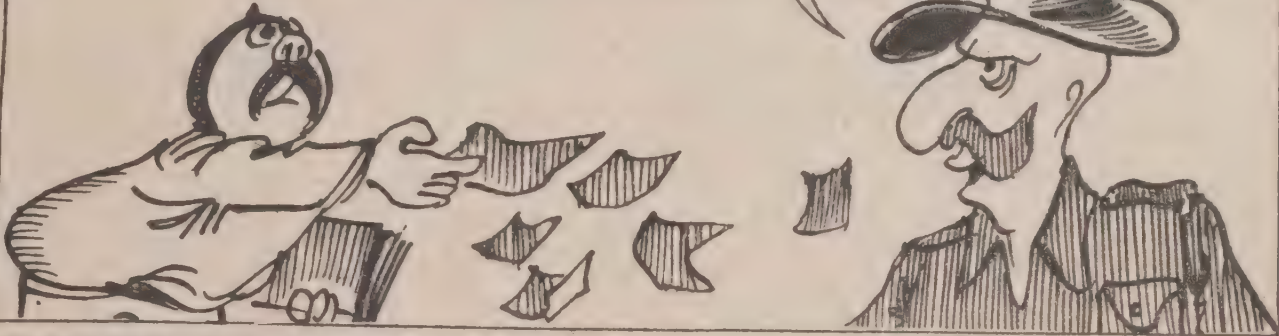
पर्चे का मजबून

भाइयों, बहरों को सुनाने के लिए धमाके की जरूरत पड़ती है. हमने क्रिकेट के खिलाफ ग्रावाज उठाई लेकिन हमारे देश को खोखला बनाने वाले इस खेल को ग्रभी तक खेल कर गरीब ग्रौर मेहनत कश जनता के साथ ग्रन्याय किया जा रहा है। हम चाहते तो भाग सकते थे लेकिन हम नहीं भागेंगे क्योंकि हम कोई गलत काम नहीं कर रहे हैं। हम ग्रपना हक मांग रहे हैं। फांसी का फंदा भी हमें नहीं डरा सकता।

पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे ग्रगले ग्रंक में पढ़िये।

एक स्थान पर एक नवयुवक काम किया करता था, वह काम चोर था। इधर-उधर घूम फिर कर काम का समय गंवाता। वर्ष के अन्त में काम के अनुसार वेतन बढ़ाने का समय आया तो वह कम्पनी के मालिक के पास गया और बोला, 'सर, अगर मैं अगले दो सप्ताह खूब मेहनत करूं तो मुझे वेतन में वृद्धि मिलेगी ?'

कम्पनी के बूढ़े मालिक ने कहा, 'देखो बेटा एक कमरे में थर्मामीटर रखा है। तुम उसे हाथ से पकड़ मुट्ठी की गर्माहट पहुंचा कर उसके ताप सूचक अंक को बढ़ा सकते हो लेकिन तुम्हारे ऐसा करने से कमरे के तापमान में कोई फर्क नहीं पड़ेगा। कमरा ठंडा ही रहेगा।'

सारांश—इस कहानी का सारांश एक वाक्य में लिख भेजिये। सर्वश्रेष्ठ सारांश को पुरस्कार।

अन्तिम तिथि— १४ जुलाई १९७९

: दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

हा हा हा

● एक कर्नल साहब ने पूरे मुर्गे की करी का आर्डर दिया। करी आयी तो साहब ने प्लेट की ओर देखा और बेटर से बोले, 'क्यों भाई, मुर्गे की एक टांग छोटी क्यों है ?'

बेटर, 'साहब आपको यह मुर्गा खाना है या इससे परेड करवानी है ?'

● कम्पनी का मैनेजर नौकरी के उम्मीदवार से, 'आपने जो प्रमाण-पत्र दिये हैं उससे पता लगता है पिछले दो महीनों में आपने अट्ठारह जगह काम किया है !'

उम्मीदवार, 'इसी से आपको पता लग गया होगा कि मेरी कितनी मांग है।'

● दो सज्जन होटल में काफी दिनों से ठहरे थे। उन्होंने कोई पैसे नहीं दिए। मैनेजर ने उन्हें अपने कमरे में बुला लिया और बिठाए रखा। बैठे-बैठे दो घंटे हो गये तो एक [illegible] बोला, 'मैनेजर साहब, आपने हमें दो घंटे से क्या बिठा रखा है ?'

मैनेजर ने उत्तर दिया, 'अजी साहब आपको बाकी पैसे लौटाने हैं न ! लेकिन मुसीबत यह है कि आपने अभी बिल को चुकता करने के लिए पांच सौ रुपये दिए ही नहीं तो बाकी के पैसे कैसे लौटाऊं ?'

● जज, 'तुमने चोरी क्यों की ?'

अभियुक्त, 'यह मेरे खून में है हजूर।'

जज, 'क्या मतलब ?'

अभियुक्त, 'पिछली बार बीमार होकर अस्पताल गया तो मुझे खून की जरूरत पड़ी ! जिस आदमी ने मुझे खून दिया वह एक चोर था।'

● एक छोटे कस्बे के अखबार ने सुर्खियों में छापा, 'हमारे समाचार पत्र ने कल सबसे पहले कस्बे के सिनेमा घर में आग लगने का समाचार छापा था। आज हम गर्व के साथ दोबारा सबसे पहले एक और समाचार छाप रहे हैं। कल की खबर में कोई सचाई नहीं थी।

● एक जनता पार्टी के समर्थक ने कांग्रेस (आई) समर्थक लड़की से शादी कर ली। शादी का उद्देश्य—तीसरी पार्टी को जन्म देना।

पुरस्कार ५ रु०

हम इस प्रतियोगिता में हर सप्ताह एक नेता को लेंगे। आपको उस नेता के नाम के अक्षरों से क्रमवार एक व्यंग्य कविता लिखनी होगी जो उसके कारनामों पर फिट बैठे। उदाहरण के तौर पर हमने राजनारायन जी पर कविता लिखी है। उसी प्रकार आप नीचे लिखे नाम पर कविता लिख भेजिए। नाम के सारे अक्षरों से क्रमवार कविता की लाइनें बनानी चाहिये।

सर्वश्रेष्ठ कविता को पुरस्कार

रायबरेली के बैसाखी नंद हैं ये,
जनता पार्टी की दाल भात में मूसरचंद हैं ये।
माना बयान रोज अखबारों को देते हैं,
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की खबर लेते हैं।
यह साहब जिसके पक्ष में खड़े होते हैं,
नादानी से उसी की लुटिया डुबोते हैं।

म धु द डं व ते

दीवाना के कार्यालय में हल पहुंचने की अन्तिम तिथि १४ जुलाई १९७९

उत्तर केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

तुक्कम तुक्का
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

● एक मियां बीवी डिपार्टमेन्टल स्टोर में गये 'बीवी शॉपिंग करने लगी।' मियां की गोद में बच्चा था। अचानक बच्चा जोर-जोर से रोने लगा। पिता चुप कराने का यत्न करने लगा ! स्टोर के मालिक ने पूछा कि क्या बात है? पिता बोला, 'साहब, बच्चा पहली बार अपनी मम्मी को पैसे फूंकते देख रहा है।'

मोटू
पतलू
एक रोज घसीटा राम
और उसका मित्र जूडो मास्टर सड़क
पर ख्याली पुलाव पकाते जा रहे थे ।

मेरी हथेली में खुजली हो रही है, लगता है कहीं से रुपया मिलेगा ।
मेरा सर खुजला रहा है । लगता है कोई सर पर ताज पहनायेगा । मैं तो वैसे भी बेताज का बादशाह हूँ । शक्ल जंगल की कहानियों के हीरो जैसी है । मैं अगर टार्जन बन गया होता तो कमाल हो जाता ।

मैं शेर पर हमला करता

और उसे छुरे से मार कर···
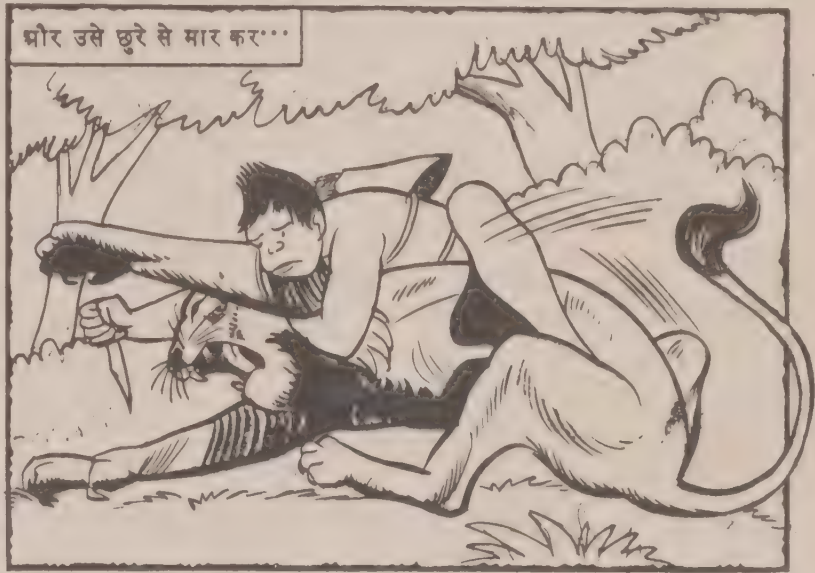
किसी लड़की को बचा लेता और हीरो बन जाता ।

तू क्या हीरो बनेगा । मैं पैदायशी और खानदानी हीरो हूं ।
मेरी तो शक्ल भी फेंटम और सुपरमैन जैसी है ।

मैं उल्टा होकर मकानों पर चढ़ता ।

हवा में छलांग लगाता, और आकाश में तैरता ।

और समगलरों और बदमाशों को पकड़ कर उनके गैंग का सफाया कर देता ।

मुझे बीस साल का तजुर्बा है सुपर हीरो बनने का । अभी मैंने अपने हाथ दिखाये कहां है दुनिया वालों को ।

दुनिया वाले तो अपने पांव कब से दिखा रहे हैं तुम्हें ।
जूडो मास्टर की कोहनी घसीटा राम से टकराई तो उसका संतुलन बिगड़ गया ।

ग्रौर वह सीधा गटर के खुले मुंह में जा पड़ा।

पास खड़े एक लड़के ने जूडो मास्टर को इस दुर्घटना की सूचना दी
तुम्हारा साथी इस गटर में जा पड़ा है।
क्या कहा ? मेरे फैंटम ग्रौर सूपर मैन का इस गटर में बेड़ा गर्क हो गया है।
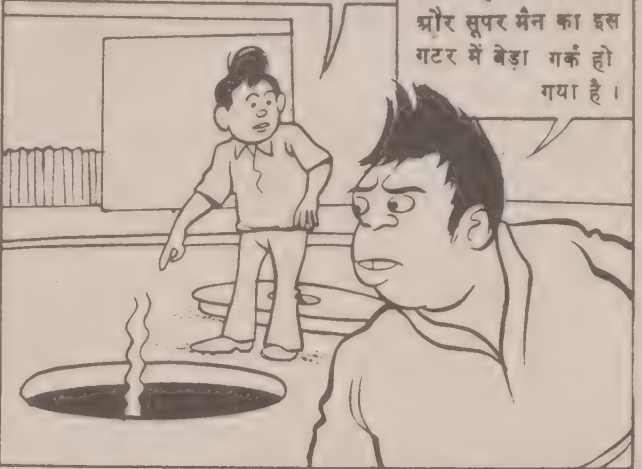
ग्रपने साथियों को सहायता के लिये बुला कर लाऊं।
जूडो मास्टर सर पर पांव रख कर वहां से भाग खड़ा हुग्रा।

घसीटा राम गटर में जाकर पड़ा तो उसका सर चकरा रहा था ग्रौर टैक्नीकलर सितारे दिखाई दे रहे थे।
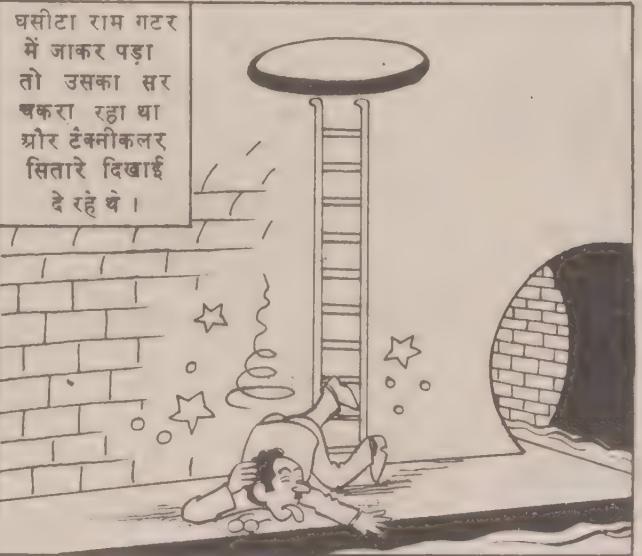
खुजली हाथ में हो रही थी ग्रौर भट्टा सर का बैठा है। ऊपर वाले को धेले का तजुर्बा नहीं है मेरे साथ न्याय करने का।
तभी गटर में एक ग्रोर से दो परछाईयां ग्राती दिखाई दीं।

ग्रौर दो ग्रजीब से बौनों को ग्रपनी ग्रोर ग्राता देख कर घसीटा राम चौंक गया।
ग्रा गये गुरू जी ? मैं ने फ़ोटो में जो शक्ल देखी थी, वह याद है। यह गुरू जी ही हैं।
बिलकुल ठीक समय पर ग्राये हैं।

इस बात पर घसीटा राम की आँखें फट गईं।

बौने उसे कहाँ ले जा रहे हैं ? घसीटा राम को इस से गरज नहीं थी । अब तो सोने की चमक और रुपये की खनक ने उसके पाँव में बिजली भर दी थी ।
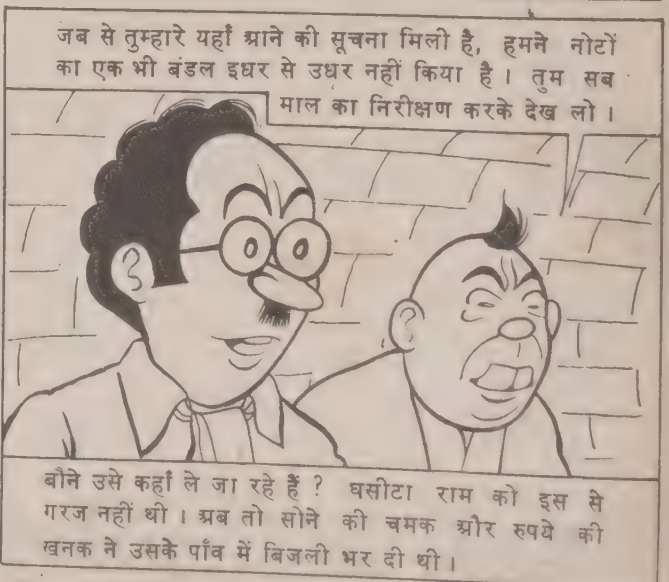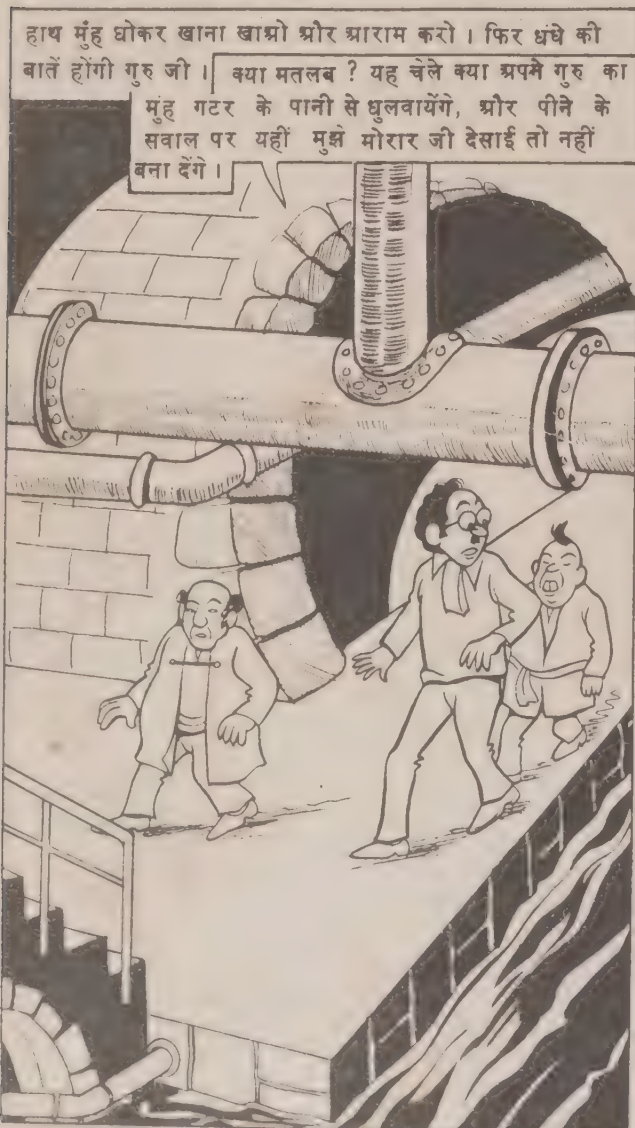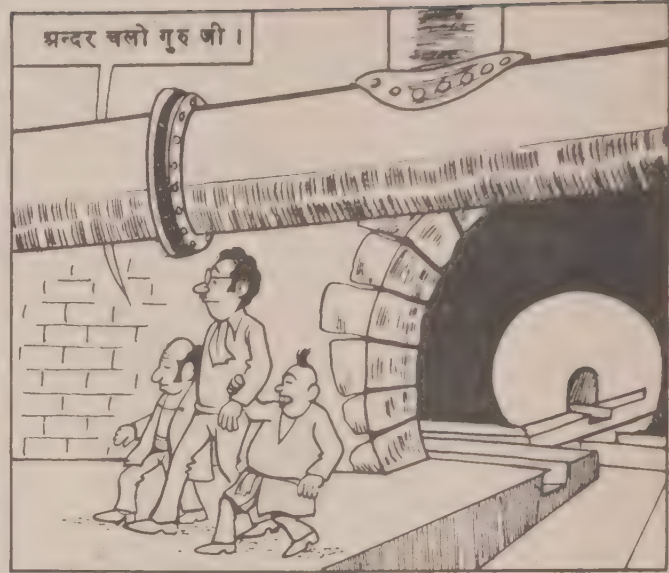
यह बीस पेटियां तो सोने की हैं ।
गिन लीजिये और हिसाब चैक कर लीजिये ।

यह नोटों की पेटियाँ हैं । इन्हें भी गिन लीजिये और खाते से मिला लीजिये गुरू जी ।

इतना सोना और इतने नोट देंगे यह चेले अपने गुरू को ? तेरी हथेली में खुजली ठीक ही हो रही थी मोतियों वाले घसीटा राम ।

घसीटा राम की आंखें चकाचौंध थीं । पांचों घी में थीं और सिर कढ़ाई में, धड़ चूल्हे में है, इसका उसे गुमान था । वह वहां पहुँच गया है और सीवर के नीचे यह किन लोगों का अड्डा है यह सोचने की उसे फुर्सत नहीं थी ।

दोनों बोने अब उसकी खूब खातिर कर रहे थे और माल खाते समय घसीटा राम सोच रहा था—
ऊपर की दुनिया में बीस साल भाड़ झोंकता रहा । सोचा था भगवान छप्पर फाड़ कर देगा । उसके लिये छाती पीटी और सर फड़वाया । अब फटी धरती के अन्दर घुसा कर भगवान ने मेरी किस्मत चमकाई है । अब भला मैं ऊपर की दुनिया में क्यों जाने लगा । वहाँ तो भिखमंगे और किस्मत के मारे कंगाल रहते हैं ।
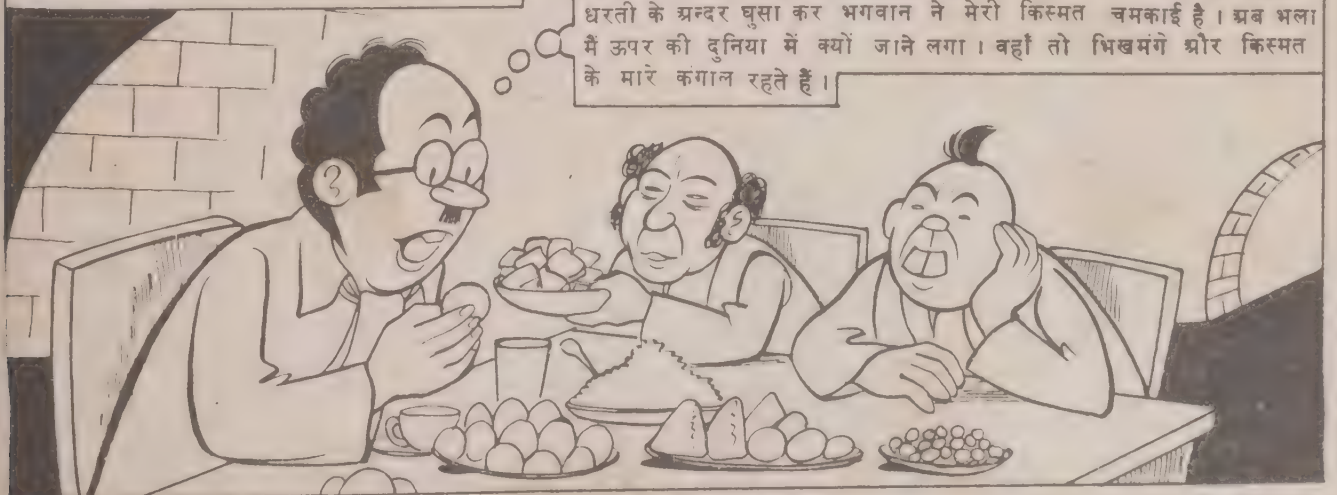
मैं चरस, गांझा और अफीम लाया हूं ? इन्होंने समझा क्या है मुझे ? यहां सीधी उंगली से घी निकलता नजर नहीं आता । सोना देने के नाम पर टरखा रहे हैं । इनका दीवान अफीमची या दीवान का चाचा बातूनी आ गये तो वे भला मुझे सोना क्यों देने लगे । मेरे विचार में मैं अपने घर जाऊं और इनकी आंखों में झोंकने के लिये मिर्चें ले आऊं ।

यह विचार आते ही घसीटा राम आँख बचाकर सीवर के उस चैम्बर से बाहर आ गया जहाँ बोनों का अड्डा था ।

इस बार इनके सर फोड़ने के लिये लट्ठ भी लेकर आऊंगा । मरने से पहले यह यहाँ से एक तिनका भी नहीं हिलने देंगे ।
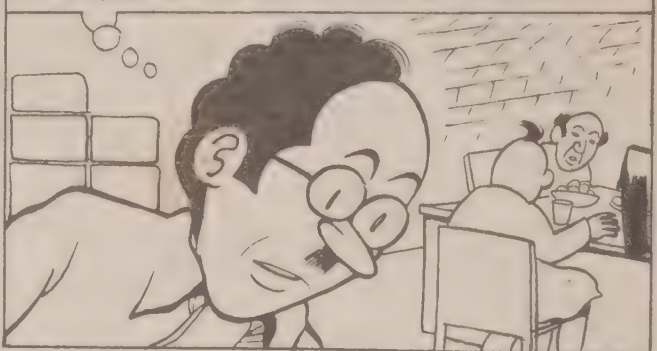
दूसरी ओर जूडो मास्टर डाक्टर झटका के पास पहुंचा तो वहाँ बहरे पतलू के कान का इलाज हो रहा था ।

घसीटा राम के साथ खतरनाक बात हो गई है ।

बहरे का इलाज कर रहे हो और खुद बहरे हो। मैं कह रहा हू घसीटा राम गटर में गिर गया है।
क्या कहा, गटर में गिर गया है? कौन से गटर में गिरा है? भाग कर चलो उसे बचाने।

इसके बाद के धमाके आगामी अंक में देखिये

किस्सा छक्कों का

एक क्रिकेट मैच का सबसे रोमांचक क्षण कौन सा है ? निस्सन्देह ही जब छक्का लगता है वह क्षण। आइये आज कुछ छक्कों के बारे में आपको कुछ मनोरंजक जानकारी दें।

विश्व में प्रथम श्रेणी मैचों में छक्के लगाने में समरसैट के आर्थर वलार्ड का सानी नहीं हुआ है। वलार्ड ने अपने छक्कों से सुसज्जित प्रथम श्रेणी क्रिकेट जीवन में पांच सौ से ऊपर छक्के मारे। चार बार इंगलिश सीजन में वह छक्का चैम्पियन रहे। १९३५ में ७२ छक्के, १९३७ में ५७ छक्के, १९३८ में ५७ छक्के तथा १९३३ में ५१ छक्के। १९३६ व १९३८ में दो बार उन्होंने लगातार गेंदों पर पांच-पाँच छक्के मारे। उनका यह कीतिमान गैरी सोवर्स के आने पर ही टूटा। १९६८ में मैल्कम मैश के एक ओवर की छः की छः गेंदों पर सोवर्स ने छक्के लगाये।

१९६७ में पाकिस्तान की ओर से खेलते हुए मजीद खां ने गलैमर्गन के विरुद्ध १४७ रन बनाये जिसमें १३ छक्के व १० चौके थे। १९७४-७५ में दो बार वेस्टइण्डीज के मार्डन ग्रीनिज काऊंटी मैचों में तेरह-तेरह छक्के मार कर मजीद खां से आगे बढ़ गये। लेकिन प्रथम श्रेणी के मैचों की एक पारी में सर्वाधिक छक्के मारने का रिकार्ड न्यूजीलेंड के जोहनरीड का है। उन्होंने १५ छक्के मारे।

भारत में एक पारी में हिन्दू की ओर से एन० सी० सी० के विरुद्ध खेलते हुए सीके नायडू ने ११ छक्के मारे थे (१९२६-२७ बम्बई)। विदेशों में ११ छक्के मारने वाले चार्ली बार्नेट व रिन्चीबेनी हुए हैं।

भारत के दूसरे छक्केबाज सलीम दुर्रानी ने १९६४ में कानपुर टैस्ट में ' में केवल २९ मिनट में अर्ध शतक बनाया था (विरुद्ध इंगलैंड) इससे सत्तर वर्ष पूर्व जेठी ब्राउन ने मेलबोर्न टैस्ट में इंगलैंड की ओर से खेलते हुए मात्र २८ मिनट में अर्धशतक पूरा किया था।

सबसे कम समय में टैस्टशतक बनाने का श्रेय आस्ट्रेलिया के ग्रेगरी को है। उन्होंने केवल ७० मिनट में शतक बनाया था। १९३० में लीडसमें आस्ट्रेलिया के ड्राव ब्रैडमैन को २१४ मिनट में दोहरा शतक बनाकर दोहरे शतक का रिकार्ड स्थापित किया।

टैस्ट मैचों में एक पारी में सर्वाधिक छक्कों का रिकार्ड इंगलैंड के वाल्टर हेमंड का है। ऑकलेंड में १९३२-३३ में उन्होंने एक पारी में १० छक्के लगाये थे।

कैच टैस्ट मैचों के

विश्व में टैस्टों में सर्वाधिक औसत कैचों का रिकार्ड एकमात्र सोलकर का है। कैचों का पूरा ब्यौरा निम्न प्रकार ही है।

नाम खिलाड़ी	देश	कुलमैच	टैस्टमैच	औसत
एकनाथ सोलकर	भारत	५३	२७	१.९६
बाबी सिम्पसन	आस्ट्रेलिया	११०	६२	१.७७
टोनी ग्रेडा	इंगलैंड	८७	५८	१.५०
इयान चैपल	आ.	१०३	७२	१.४३
ग्रेग चैपल	आ.	७३	५१	१.४३
ब्रूस मिशैल	द. आ.	५६	४२	१.३३
वाल्टर हेमंड	इं०	११०	८५	१.२९
इयन रेडपाथ	आ०	८३	६६	१.२५
माजिदखां	पा.	५४	४४	१.२२
टोनी लाक	इं०	५९	४९	१.२०
गैरी सोवर्स	वे. इं.	११०	९३	१.१८
कालिन काउड्रे	इं.	१२०	११४	१.०५
राय फ्रेडरिक्स	वे. ई.	६२	५९	१.०५
माइक स्मिथ	इं०	५२	५०	१.०४
रिश्री बेनो	आ.	६५	६३	१.०३
विल्फ्रेड रोडस	इं.	६०	५८	१.०३
टाय ग्रेवनी	इं.	८०	७९	१.०१
फ्रैंक वूली	इं.	६४	६४	१.००
फ्रैड टूमैन	इं०	६४	६७	.९५
नील होर्वे	आ.	६२	७९	.७८
लेन हटन	इं	५७	७९	.७२
कैन बैरिंगटन	इं.	५८	८२	.७०
लोसगिब्ज	वे. इं	५१	७९	.६४
रोहन कन्हाई	वे. इं.	५०	७९	.६३

● एक साहब ने वेटर को बुलाकर कहा, 'मेरी चाय में मक्खी है।' वेटर बोला, 'शSSSSSS ! चुपचाप पी जाइये चाय। यहाँ बहुत हुज्जत करने वाले ग्राहक आते हैं। इन्होंने सुन लिया तो सभी मुझसे लड़ेंगे कि उनकी चाय में मक्खी क्यों नहीं है ?' ●

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

जूडो कैराटे कैसे सीखें?

कोहनी का प्रयोग

इस प्रहार में कोहनी की नोक का इस्तेमाल किया जाता है। कोहनी का यह प्रहार नीचे से ऊपर की दिशा की ओर होना चाहिए। कोहनी मारकर हाथ तुरन्त पीछे खींच लीजिए। यह आपकी सुरक्षा की दृष्टि से उचित तरीका है।

कोहनी से पीछे की ओर प्रहार

अब मान लीजिए यदि कोई शत्रु आपको पीछे से आकर अपनी दोनों भुजाओं से आपकी गर्दन जकड़ ले, ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे! ऐसी स्थिति में पहले यह अंदाज लगा लीजिए कि आपके हाथों के कौन-सी तरफ की कोहनी शत्रु के नर्म स्थल पर आघात पहुंचा सकती है। मान लीजिए, शत्रु पर आपकी बांयी कोहनी से सफलता पूर्वक आघात पहुंचा सकते हैं—तत्काल ही बांयी हाथ की मुट्ठी कसकर बांध लीजिए और हाथ को कोहनी से मोड़कर पहले आगे की ओर ले जाइए और फिर फुर्ती से झटके के साथ हाथ की कोहनी को पीछे ले जाकर शत्रु के पेट या पसलियों के जोड़ वाले नर्म भाग पर प्रहार कर दीजिए। शत्रु तिलमिलाकर फौरन आपकी गर्दन छोड़ देगा। उसके बाद तो आप कैराटे के सीखे हुए अन्य दांव-पेंचों का भी उस पर प्रहार कर विजय प्राप्त कर सकते हैं। अगर आप की कोहनी का प्रहार सफल न हुआ हो और आपके पीछे घूमने की बिल्कुल भी गुंजाइश न हो तो आप अपने सिर को पहले आगे झुकाकर फिर फुर्ती से पीछे की ओर ले जाकर शत्रु के मुँह पर अपने सिर का पिछला भाग कसकर मारिये। सिर की चोट से जैसे ही शत्रु की पकड़ ढीली हो—आप उसके पेट को निशाना बनाकर दोबारा कोहनी का भरपूर वार कर सकते हैं।

कोहनी का नीचे की ओर प्रहार

अगर शत्रु आपको पीछे से आकर कमर से पकड़ ले अथवा बगल से आकर कमर से पकड़ ले, तो आप अपनी कोहनी का प्रहार उसकी गर्दन पर कर सकते हैं अथवा उसकी कनपटी के भाग पर कर सकते हैं। यदि उसका मुँह आपकी कोहनी की मार के अन्दर है तो उसके मुंह पर कोहनी का प्रहार कर सकते हैं। या मान लीजिए यदि शत्रु आपकी कमर को पकड़ कर झुक-सा गया है और उसकी पीठ आपकी कोहनी की मार की दिशा में है तो आप कोहनी को उसकी पीठ पर उसी प्रकार मार सकते हैं जैसे हथौड़े से नीचे की ओर चोट की जाती है। यह चोट रीढ़ की हड्डी पर होनी चाहिए।

मुख्य हथियार—पैर

जिस प्रकार कैराटे खेल में हाथ का इस्तेमाल आप हथियार के रूप में कर सकते हैं। उसी प्रकार मुख्य हथिहार के रूप में पैर भी प्रभावशाली सिद्ध होता है। अभ्यास
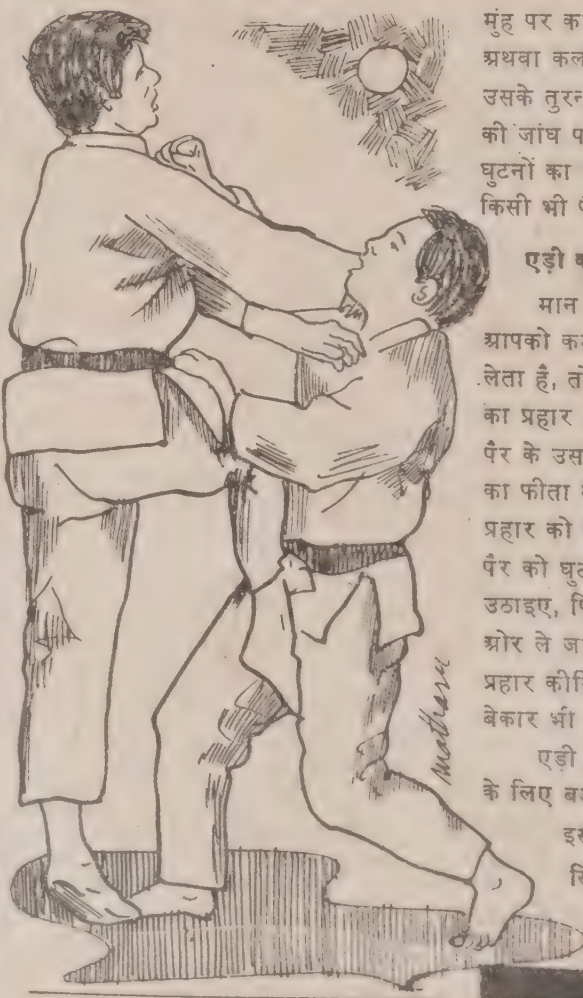
द्वारा आप पैरों मे शत्रु के पैरों से लेकर उसके सिर तक पर आघात पहुंचा सकते हैं लेकिन यह सब आपके पैर संचालन की कुशलता और अभ्यास के ऊपर निर्भर है।

घुटने का प्रहार

घुटने के प्रहार का उपयोग शत्रु के पास आ जाने पर ही प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है। घुटने के द्वारा शत्रु की जांघ पर, पसलियों पर, पेट पर प्रहार किया जा सकता है (दोनों जांघों के बीच में प्रहार करने की कोशिश कभी न कीजिए। इससे अण्डकोषों में चोट लग जाने से शत्रु की मृत्यु भी हो सकती है। किन्हीं बहुत ही जटिल परिस्थिति में इस प्रहार का प्रयोग करना चाहिए—वह भी बहुत जोर से नहीं।)

घुटने के प्रहार का उपयोग शत्रु के उ[illegible] पैर की जांघ पर करना चाहिए जो वह आ[illegible] निकाले हुए हो।

यदि शत्रु अपने घूंसे का प्रहार आपके मुंह पर करता है तो सबसे पहले कोहनी [illegible] अथवा कलाई द्वारा वार को बचाइए और उसके तुरन्त बाद ही घुटने का प्रहार श[illegible] की जांघ पर अथवा पेट पर कर दीजिये। घुटनों का प्रहार सुविधानुसार दायें या बा[illegible] किसी भी पैर का कर सकते हैं।

एड़ी का प्रहार

मान लीजिए, अगर शत्रु पीछे से आव[illegible] आपको कमर से या गर्दन से कसकर पक[illegible] लेता है, तो ऐसी स्थिति में आप अपनी ए[illegible] का प्रहार उसके घुटने की कटोरी पर अथव[illegible] पैर के उस वाले भाग पर, जहां आप जू[illegible] का फीता बांधते हैं—कर सकते हैं। एड़ी [illegible] प्रहार को प्रभावशाली बनाने के लिए पह[illegible] पैर को घुटने से मोड़कर आगे ऊपर की ओ[illegible] उठाइए, फिर एड़ी को कसकर पीछे [illegible] ओर ले जाते हुए घुटने की कटोरी [illegible] प्रहार कीजिए। इस प्रहार से शत्रु का घुटन[illegible] बेकार भी हो सकता है।

एड़ी का यह प्रहार स्त्रियों व लड़कि[illegible] के लिए बड़ा उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसका एक कारण यह भी है [illegible] स्त्रियां अक्सर ऊंची कठोर एड़ी सैंडिल पहनती हैं।

प्र० : रडार का क्या अर्थ है, तथा इसका विकास कब हुआ और इसके क्या-क्या लाभ हैं ? **टिम्कू मोंगा—मोगा**

उ० : रडार का अर्थ है Radio-Direction and Range अर्थात रेडियो दिशा तथा सीमा। इसका विकास वैज्ञानिकों द्वारा सन् १६३० में तब हुआ जब इस बात का पता चला कि रेडियो स्टेशनों द्वारा प्रसारित तरंगें वायुयान द्वारा परिवर्तित होती हैं।

आधुनिक अत्यन्त जटिल रडार की सहायता से धुंध में जहाजों का संचालन कुशलतापूर्वक किया जाता है। दिखाई न देने के समय वायुयानों को पृथ्वी पर रडार की सहायता से उतारा जाता है, मिसाईलस का पता लगाया जाता है तथा इनका नियन्त्रण किया जाता है। गति की सीमा से बाहर तेज दौड़ती हुई मोटरों का भी पता लगा लिया जाता है।

रडार का कार्य इसके द्वारा एक बहुत शक्तिशाली उर्जा की तरंग को बहुत ही कम समय के लिए प्रसारित करके किया जाता है। ये रेडियो उर्जा तरंग रडार सेट से १८६,००० मील प्रति सैकिण्ड की गति से फैलती है। वायुयान और जहाज जैसी कोई भी वस्तु इस उर्जा का कुछ भाग वापस रडार की ओर परिवर्तित करती है। रडार का ग्रहण करने वाला सेट इस परिवर्तित उर्जा को ग्रहण कर लेता है तथा इलैक्ट्रोनिक सर्कट द्वारा उर्जा के वस्तु तक पहुंचने और वापस आने का समय नापा जाता है और वस्तु की दूरी का पता लगाया जाता है। उदाहरण के लिए यदि उर्जा को इस यात्रा में १८६००० मील तक की यात्रा करनी पड़ी तो इसमें एक सैकिण्ड लगेगा और वस्तु इससे आधी दूरी अर्थात ६३००० मील पर होगी। १६४ गज की दूरी पर स्थित वस्तु तक की यात्रा में केवल एक माइक्रो सैकिण्ड का समय लगता है परन्तु इतना थोड़ा समय भी इलैक्ट्रोनिक सर्कट की सहायता से आसानी से नाप लिया जाता है।

वस्तु की दिशा का ज्ञान रडार से एक ही दिशा में सिगनल भेज कर किया जाता है रडार का ऐन्टीना हाथ से या स्वचालित यन्त्र से घुमाया जाता है। रडार के ऐन्टीना को परिवर्तित सिगनल पा लेने तक घुमाया जाता है और वस्तु की दिशा निर्धारित हो जाती है।

प्र० : मिस्र में पाये जाने वाले पिरामिड क्या हैं और ये कब और क्यों बनवाये जाते थे ? **अशोक कुमार मिश्रा—जमशेदपुर**

उ० : मिस्र में पाये जाने वाले पिरामिड वहां के प्राचीन राजाओं की कब्र हैं, जो कि सन् ३२०० और १७०० बी० सी० के मध्यकाल में बनाये गये थे। ये पिरामिड पत्थर या चौकोर तले की ढलवां किनारों वाली सिर पर मिलने वाली ईंटों से बने हुए हैं। सम्भवत: इनकी बनावट का सम्बन्ध इन राजाओं को सूर्य के समान देवता समझने से होगा, परन्तु इसका कोई ठोस प्रमाण

नहीं है। मेक्सीको में भी मिस्र के पिरामिडों के समान ही सूर्य तथा चन्द्रमा के पिरामिड पाये गये हैं। इसी आधार पर कहा जा सकता है कि शायद इन पिरामिडों का सम्बन्ध भी सूर्य पूजन से होगा।

सबसे पहला पिरामिड 'ज़ोज़ेर' द्वारा तीसरे मिस्र राजवंश शासन के काल में बनवाया गया था। उस शासक का पिरामिड 'सक्कारा' में बनाया गया था। ये पिरामिड २०० फुट की ऊंचाई तक जाने वाली सीढ़ियों के रूप में बनाया गया था। 'गीज़ा' में मिस्र के सबसे प्रसिद्ध पिरामिड हैं। ये बाद के राजाओं द्वारा बनवाये गये थे। राजा 'चिओप्स का विशाल पिरामिड ढाई टन के बड़े-बड़े ब्लाकस का बना हुआ है।

ये इमारत बहुत ही चतुराई से बनाई गई है। ये बहुत ही सही है. इसके चारों कोने कम्पास के चार बिन्दुओं से बिलकुल मेल खाते हैं। पथरीली जमीन पर होने के बावजूद भी इसके उत्तरपश्चिमी कोने और दक्षिणपूर्वीय कोने में केवल आधा इंच की निचाई का अन्तर है। इसके बनाने के सही तरीके का पूरी तौर से मालूम नहीं है परन्तु समझा जाता है कि इसे भीतर से शुरू कर बाहर को बनाया गया होगा तथा इसके बाद विशाल पत्थरों को किसी प्रकार रैम्प या किसी खींचने वाली गाड़ी की सहायता से ठीक स्थान पर लगाया गया होगा।

पिरामिडों के भीतर अत्यन्त सुन्दर तथा विशाल दफनाने के कक्ष बने होते हैं जिनमें बड़े-बड़े राजाओं तथा महान व्यक्तियों के शवों को संलेपित करके सुरक्षित रक्खा जाता था। इन लोगों को बहुमूल्य हीरे जवाहारात सोने की वस्तुओं तथा दूसरे जन्म में आवश्यक हर प्रकार के सामान के साथ दफनाया जाता था।

लूटने से बचाने के लिए इन पिरामिडों में काफी सावधानी बरती जाती थी फिर भी ये सभी लूटी जा चुकी थीं।

पुरातत्वज्ञों ने इनमें से बहुत पुरानी तथा अमूल्य कला कृतियां निकाली हैं। टूटाखामेन की प्रसिद्ध कब्र में से तो संलेपित शव भी निकाले गये हैं।

क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

वैज्ञानिक ऐसे आविष्कारों की खोज करें...

वैज्ञानिक एक ऐसी घर्षण हीन रोटर ब्लेड का निर्माण करें जो जरा से वायु के कम्पन से भी घूम सके । इस रोटर तथा उससे लगे डायनामो को बीच में रख महिलायें गप्प मारें, उससे रोटर चले और घर के खपत लायक बिजली उत्पन्न हो सके ।

पत्नी की फर्माइशों की सीमा नहीं है । वैज्ञानिक कोई ऐसी प्रणाली का विकास करें कि इन फर्माइशों को चीर कर खपच्चियां बना टोकरी बुनी जा सके ताकि फरमाइशों के कारण पति देव के जो बाल उड़ने लगते हैं उन्हें इस टोकरी में सुरक्षित यादगार के तौर पर जमा रखा जा सके ।

प्रेमी के वायदों को कम्प्रेसर में डाल कर तरल रूप में बदला जाये (जैसे आक्सीजन या हाइड्रोजन को कम्प्रेस करके लिक्विड बनाया जाता है) प्रेमिका इस तरल वादों में गोल गप्पे डुबो कर खा सकेगी ।

आज हर तरफ कर्मचारी हड़ताल पर आमादा हैं । थोक में नारे लगते हैं । नारों से हवा में कम्पन व लहरें पैदा होती हैं । वैज्ञानिक एक ऐसी फ्रिक्शन फ्री पनचक्की बनायें जो इन लहरों से चल सके । सारे देश वासी इन चक्कियों में अपना गेहुं पिसवा सकेंगे बहुत कम पिसाई देकर ।

खाँसी भी बेकार नहीं जानी चाहिये । कोई वैज्ञानिक ऐसी विधि खोज निकाले जिससे खांसी को कंसन्ट्रेट करके एम्पलीफाईड रूप में पाऊडर का रूप दिया जा सके । यह पाऊडर खान व सड़क वगैरह बनाने में डायनामाइट की जगह प्रयोग में हो । एक जुकाम की खाँसी से कम से कम १०० टी एन टी विस्फोटक शक्ति प्राप्त होनी चाहिये ।
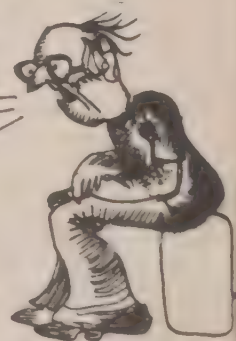
गैस पेपरों को चुइंगम में बदलने का तरीका ईजाद होना चाहिये ताकि परीक्षार्थी गैस पेपर का घोटा मारने के बाद चुइंगम खाता हुआ परीक्षा देने जा सके ।

वैज्ञानिक नेताओं के वायदों से पापड़ बनाने की विधि का विकास करें । ताकि वायदे तो पूरे होंगे नहीं कम से कम लोग पापड़ तो खा सकें ।

कोई अगर चमचा गीरी से मक्खन निकालने का प्रोसेस आविष्कार करे तो भारत की चांदी हो जायेगी । भारत सारी दुनिया को मक्खन सप्लाई करने लायक हो जायेगा ।

पति के देर से घर आने पर पत्नियां कुढ़ती हैं । इस कुढ़न को कपड़े में परिवर्तित करने की विधि खोजी जाये ताकि गृहणियां कुढ़न छाप कपड़े बर्तन वालियों से बदलवा कर स्टेनलेस स्टील के बर्तन ले सकें ।

पार्टियों के घोषणा पत्रों से तेल निकालने का प्रोसेस डवलप किया जाये । चुनाव किया जाये । चुनाव घोषणा पत्रों के तेल में लोग पकौड़े तल कर रख सकेंगे ।

प्रेमिका की इंतजारी में बिताई घड़ियों को बट कर रस्सी बनाने की विधि का विकास हो । यह रस्सी आगे चल कर फंदा बनाने के काम आयेगी जिसमें या तो प्रेमी खुद लटक जायेगा या प्रेमिका को···
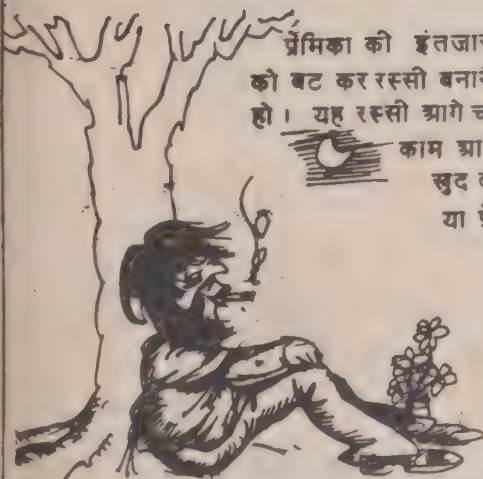
मियां बीबी में रोज झगड़े होते हैं । दोनों गर्म हो जाते हैं । वैज्ञानिक इस गर्मी को प्रयोग में लाने की विधि का विकास करें ताकि एक बार के झगड़े की गर्मी से कम से कम दाल तो पक ही जाये ।

उर्दू-हास्य-व्यंग्य

जानकारी का एन्साइक्लोपीडिया

मूल : कन्हैयालाल कपूर
अनु : तरनजीत

श्रीमती जी कहती है कि ग्राप ख्वामह-ख्वाह मुन्ने के मामा को कोसते हैं। हमारा ग्राग्रह है कि मुन्ने के मामा को न कोसा जाये। ग्रब ग्राप ही इन्साफ से कहिये। हम दोनों में से कौन न्यायसंगत है। हमारा तो सौ प्रतिशत ख्याल है कि इस मुसीबत की सारी जिम्मेदारी मुन्ने के मामा पर लागू होती है। न वह मुन्ने को उसके जन्मदिन पर 'जानकारी का एन्साइक्लोपीडिया' उपहार में देता ग्रौर न मुन्ना उसे पढ़ने के बाद हमसे तरह-तरह के सवाल करने का प्रयत्न करता।

मुन्ना ठहरा एकदम किताबी कीड़ा। उसने केवल पन्द्रह दिनों में यह किताब पढ़ डाली। पर सितम यह कि वह जो कुछ पढ़ता है, उसे झट याद हो जाता है। किताब खत्म करने के बाद उसके सिर में उन्माद समाया ग्रपने बड़ों का इम्तहान लिया जाये, यानी इस बात की खोज की जाये कि ये बुजुर्ग किस्म के लोग जो ग्रपने को विद्वान समझते हैं, वास्तव में कितने पानी में हैं। हम ग्रखबार पढ़ रहे थे कि कमरे में प्रवेश करने के बाद मुन्ने ने सवाल किया, 'डैडी ! भला पेनिसिलीन किसने ईजाद की थी ?

हम घबरा गये। यह सही है कि कई बार हमने पेनिसिलीन के टीके लगवाये हैं, टीका लगवाते समय डाक्टर के ग्रलावा पेनिसिलीन के निर्माता को भी मन ही मन बद्दुग्राएँ दी हैं, लेकिन इस बात का सुराग लगाने की ग्रभी कोशिश नहीं की कि वह भला मानस था कौन ? लेकिन हमें मुन्ने के सवाल का कुछ तो जवाब देना था। हमने स्वयं ही मुन्ने को एक बार नसीहत दी थी कि ग्रधिक से ग्रधिक सवाल पूछा करो। इससे जानकारी बढ़ती है, इसलिए हमने एक-ग्राध मिनिट सोचने के बाद कहा, 'पेनिसिलीन डाक्टर ग्रलादीन का ईजाद है।'

मुन्ने ने कहकहा लगाते हुए कहा, 'वाह डैडी ! ग्राप मुझे बना रहे हैं। जनाब पेनिसिलीन डाक्टर एलेग्जेंडर फ्लेमिंग ने ईजाद की थी।'

हम लज्जित-से हो गये। इतने में मुन्ने ने दूसरा सवाल दाग दिया :

'डैडी, टंगस्टन क्या होती है ?'

'हमारे ख्याल में किसी चीनी कवियत्री का नाम है।'

'बिल्कुल गलत।'

'तो फिर कोई झील होगी।'

'यह भी गलत'

'तो फिर शायद वजन तोलने वाली मशीन को कहते होगें।'

'यह भी गलत।'

'पता नहीं, क्या बला होती है ?'

'ग्राश्चर्य ! ग्रापको इतना भी पता नहीं ! टंगस्टन उस धातु का नाम है, जो बिजली के बल्ब में होती है ग्रौर जो गर्म होने के बाद रोशनी देती है।'

'ग्रब तुम बाहर जाकर खेलो। हमें ग्रखबार पढ़ने दो।'

'सिर्फ एक सवाल ग्रौर···दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप कौन-सा है ? ग्रौर उसका क्षेत्रफल कितना है ?'

'लंका या सारडीनिया।'

'गलत !'

'ग्रच्छा, तुम बताग्रो।'

'ग्रीनलेंड। क्षेत्रफल ग्राठ लाख चालीस हजार वर्गमील। हवाले के लिए देखिए जानकारी का एन्साइक्लोपीडिया, पृष्ठ ....।

मुन्ना जीत के डंके बजाता हुग्रा बाहर चला गया। हम सोचने लगे कि ग्राज सारी शेखी किरकिरी हो गयी। चार सवालों में से एक का भी सही जवाब न दे सके। कुछ दिन के बाद हम ग्रपने दोस्तों को बातों ही बातों में बता रहे थे, नेपोलियन ने एक बार कहा था, 'वाटरलू का युद्ध ईटन के खेल के मैदान में जीता गया।' दुर्भाग्य से मुन्ने ने हमारी बात सुन ली। वह फौरन उसका खंडन करने के लिए कमरे में ग्रा धमका।

'माफ कीजिये डैडी। यह कथन नेपोलियन का नहीं, उसके विजेता ड्यूक ग्रॉफ वेलिंगटन का है। हवाले के लिए देखिये जानकारी का एन्साइक्लोपीडिया।'

कुछ ग्रौर दिनों के बाद हमें मुन्ने के मुख्याध्यापक से एक पत्र प्राप्त हुग्रा, लिखा था, 'ग्रापके मुन्ने ने दिन-रात ग्रपने स्कूल-मास्टरों से ग्रजीब-ग्रजीब सवाल पूछ-पूछकर उनका काफिया तंग कर रखा है। कृपया मुन्ने को समझाइये कि वह ग्रपने ग्रध्यापकों पर दया करें, नहीं तो वे ग्रपनी नौकरी से इस्तीफा दे देंगे।'

हमने मुन्ने को बुलाकर पूछा, तो उसने ग्रपनी सफाई में कहा, 'डैडी ! हमारे मास्टरों को तो कुछ ग्राता नहीं। वे बेचारे तो इतना भी नहीं जानते हीलियम किसलिए

शेष पृष्ठ 70 पर

बन्द करो बकवास

मेरा दिल ये पुकारे आजा।

बन्द करो बकवास, तुम्हारे मुँह की बदबू तो कह रही है जा-जा।

फुल गेंदवा न मारो, हां न मारो लगत करेजवा में चोट।

बन्द करो बकवास और अपने सर की फिक्र करो। हफ्ते भर से मेरे पैसे नहीं दिए।

दूरी न रहे कोई आज इतना करीब आओ।

बन्द करो बकवास, बुलाने से पहले अपनी खिड़की का पेन्ट तो सूखने दिया होता।

पृष्ठ १३ से आगे

'पता नहीं बेटा कहां हैं···?' माँ ने कहा, 'पाँच बजे दफ्तर से आते हैं···फिर रोज रात को तीन घंटे के लिए न जाने कहां चले जाते हैं···आज एक महीने से मैं यही देख रही हूं।'

'माँ ! कल फीस का आखिरी दिन है···कुछ प्रबन्ध हुआ ?'

'अभी तक तो तेरे पिताजी ने कुछ बताया नहीं, हो सकता है कल तक हो जाए।'

'जब आज तक नहीं हुआ तो कल तक कैसे हो जायेगा ?' विनोद ने निराश-सा होकर कहा।

फिर वह अपने कमरे में चला आया··· उसका मन स्टडी से उचाट हो गया था··· जब फीस ही जमा नहीं की जा सकती तो फिर परीक्षा नहीं देनी तो स्टडी कैसी···? वह थोड़ी देर बैठा सोचता रहा···उसके सिर में पीड़ा होने लगी थी···उसने बत्ती बुझा दी और लेटकर सोने का प्रयत्न करने लगा ···लेकिन उसे नींद नहीं आ रही थी—थोड़ी देर बाद उसे पिताजी की थकी हुई आवाज सुनाई दी···वह साथ वाले कमरे में विनोद की मां से पूछ रहे थे—

'विनोद सो गया ?'

'सो गया होगा···'यह माँ की आवाज थी।

'स्टडी नहीं की ?'

'पता नहीं···।'

विनोद का दिल धड़क उठा···हो सकता है पिताजी कोई संतोषजनक वाक्य कहें— लेकिन इसके बाद मौन छा गया और विनोद निराश हो गया। स्पष्ट था कि अगर रुपयों का प्रबन्ध हो गया होता तो पिताजी आते ही खुशी से बताते—अब उसमें यह सुनने की भी शक्ति नहीं थी कि प्रबन्ध नहीं हो पाया।

रात बहुत बीत गई थी लेकिन विनोद जागता रहा···कल फीस जमा होने की आखिरी तारीख थी···उसके सफल या असफल भविष्य में केवल एक रात और चन्द घण्टों का फासला है···लेकिन यह चंद घंटे सिवाय निराशा के और क्या दे सकते हैं··· जब दो वर्ष ही कुछ नहीं दे पाए तो चंद घंटों का क्या महत्व है—इन्सान कितना विवश है···विनोद ने सोचा ··वह प्यासा है··· कुछ ही दूरी पर पानी है किंतु वह उस जल तक नहीं पहुंच सकता—उसे केवल दो सौ रुपये की जरूरत है···अपना भविष्य संवारने के लिए···और उससे थोड़ी दूर बारह सौ रुपये रखे हैं···इसी घर में···लेकिन वह उन में से दो सौ रुपया नहीं ले सकता···वह फूलवती से थोड़ा-सा रुपया नहीं ले सकता ···उफ् भगवान ! क्या अपने चरित्र की रक्षा करना भी पाप है ? भगवान् ! तूने एक व्यक्ति को इतनी शक्ति दे दी कि वह मुझे पाप की ओर खींचने का प्रयत्न कर सके··· अगर मैं उस ओर खिंच जाऊं तो लाभ उठा सकता हूं···वरना नहीं···कुछ नहीं—रुपया दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति है—उसने सोचा वह फूलवती की इच्छा पूरी करके यह शक्ति प्राप्त कर सकता है···उसकी फीस का प्रबंध हो सकता है···वह परीक्षा दे सकता है— जरूर दे सकता है···।

इस फैसले के साथ ही उसका दिल धड़क उठा···धड़कनें कनपटियों पर हथौड़े मारने लगीं—उसने धीरे-से फर्श पर पांव रखे और बिना चप्पल के दबे-पांव कमरे से बाहर निकल आया···उसने पिताजी और मां पर चोर दृष्टि डाली और मन-ही-मन कहा, 'पिताजी ! आज आपकी मजबूरी मेरा पाप बन रही है···आपकी भूल मेरे चरित्र पर धब्बा बन रही है···भगवान् मुझे क्षमा करें।'

वह फूलवती के कमरे की ओर बढ़ा— उसे मालूम था फूलवती आज अपने कमरे में अकेली ही सो रही थी···डाक्टर को आज किसी जरूरी काम से डिस्पेंसरी में ही सोना था—धड़कते हुए दिल और काँपते हुए कदमों से वह फूलवती के पलंग की ओर बढ़ा···नीले हल्के प्रकाश में कमरे का वातावरण बहुत रोमांटिक था···सामने पलंग पर फूलवती चित्त लेटी हुई थी···उसके दोनों हाथ सीने पर रखे हुए थे। हल्की नीली रोशनी में फूलवती का गोरा रंग बड़ा भला लग रहा था···विनोद कांपते कदमों से उसकी ओर बढ़ा···उसका दिल धड़कना रुक-सा गया और कमरे की हर चीज उसे गतिशील होती सी अनुभव होने लगी—ऐसा लग रहा था जैसे कमरे की हर वस्तु उसे घूरे जा रही है ···हर चीज उसकी ओर उंगली उठाकर कह रही थी···यह रहा 'चोर'···'अपराधी' ···पापी'···यह आदमी डाक्टर की पत्नी को चुराने आया है···फूलवती का सतीत्व चुराने आया है—अगर नारी का सतीत्व का मोती चुरा लिया जाए तो उसमें रह ही क्या जाता है—केवल चलता-फिरता एक ढाचा— एक सदा का कलंक उसके माथे पर लगा देगा—वह किसी दूसरे की अमानत है—यह घोर अन्याय है—वह एक नारी का चरित्र बिगाड़ रहा है।

बिस्तर के पास पहुंचकर विनोद ने सोचा—क्या जो वह कर रहा है—ठीक है ? वह ऐसा क्यों कर रहा है ? अपना भविष्य संवारने के लिए—तो क्या अपना चरित्र गिराकर भी कोई उज्जवल भविष्य की आशा कर सकता है—क्या ऐसा भविष्य सुन्दर होगा ? अच्छा भविष्य वही है जिसमें चरित्र महान रहे—वह तो कुछ साधारण और अस्थाई खुशी के कुछ सुख के लिए अपने आपको गिरा रहा है—अपने मन को पाप की ओर धकेल रहा है—एक तुच्छ-से लाभ के लिए—वह फूलवती से उसका सब कुछ छीन रहा है—अपने संग उसे भी खाई में धकेल रहा है—फिर जैसे कमरे की हर चीज चीख-चीखकर कह रही थी—'चोर—पापी —चोर—पापी—।'

'नहीं—।' विनोद के होंठों से दृढ़ता से निकला, 'मैं यह नहीं करूंगा।'

फिर एकाएक वह तेजी से पलटा और भागकर बाहर की ओर देखा—दरवाजे के पास उसने मुड़कर देखा—फूलवती—फूलवती बिस्तर पर बैठी हुई उसकी ओर देखकर मुस्करा रही थी···उसकी मुस्कराहट कुछ ऐसी थी जैसे निमंत्रण दे रही हो··· आओ, लूट भी लो···सब कुछ तुम्हारा है— मैं इसी चाह में अकेली सोई थी—और फिर आज अवसर भी है···। शेष पृष्ठ ३६ पर

विडम्बना

यह चकाचौंध का प्रकाश,
पता नहीं कहां ठहरे !
अन्धकार के शिकंजे,
और हुए तेज एवं गहरे।
पहन कर प्रबला के ताज को,
जो चले थे,
सुनाने जनता की आवाज को,
वे स्वयं बहरे ही गये।
जनता को सुख-सुविधा—
जुटाने के नाम पर,
कुशल जेब कतरे हो गये।।

—आलोक रामपुरी

मदहोश
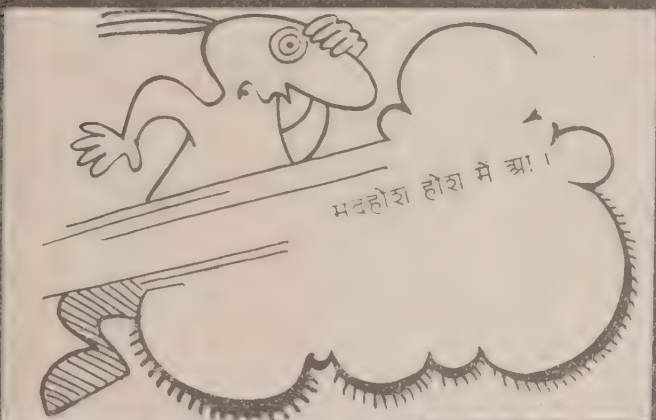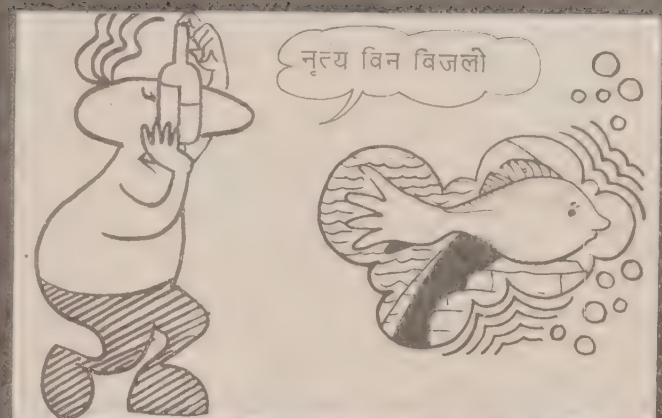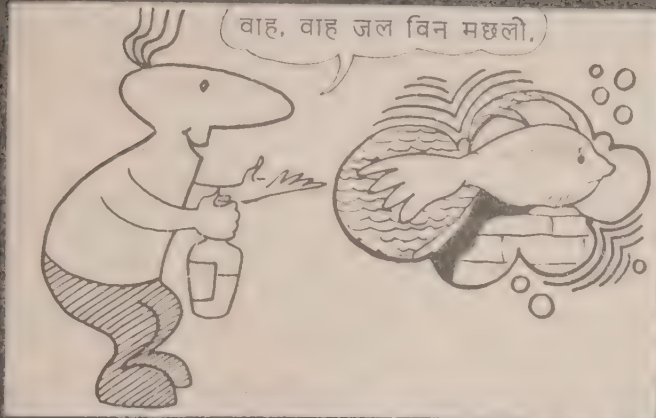
अंक नं० १६ में प्रकाशित प्रतियोगिताओं के परिणाम।

● सोचिये का सारांश

'दृढ़ निश्चय से ही सफलता प्राप्त होती है।'

विजेता महेन्द्र कुमार जैन
हाईकोर्ट के पास, खूबी की बजरिया
लश्कर-४७४००६
ग्वालियर-(म० प्र०)

● शीर्षक प्रतियोगिता का हल

तुम लाख कहो कि रहता है,
संसार तुम्हारी आंखों में
मैंने तो जब भी देखा है,
सिर्फ बेलन तुम्हारी आंखों में।

विजेता सतीश कुमार नागपाल
एम० सी० डी० ३७० गली नं० ५,
गोविन्दपुरी नई दिल्ली-११००१६

अंक नं० २० में प्रकाशित प्रतियोगिताओं के हल

● सोचिये का सारांश

छोटे से छोटे जीवों के प्रति भी अपने कर्त्तव्य पर जागरुक रहना

विजेता कमल किशोर

परिणाम

बनारसी लाल अग्रवाल
आकोट मोटर स्टैंड
(बाबाजी का मठ)
अकोला (महाराष्ट्र) पिन ४४४००२

● वर्ग पहेली का हल

विजेता
विनीत कुमार कोठिया
पुत्र पं० बंशीधर जी व्याकरणाचार्य
बीना (म० प्र०) ४७०,११३
(निर्णय लाटरी द्वारा)

दीवाना-कैमल रंग भरो प्रतियोगिता नं ८ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—प्रवीन जैन, ५४, रशीद मार्केट, पटपड़गंज रोड. दिल्ली-११००५७।
द्वितीय पुरस्कार—राजीव एन० जैन, सी। ५७, वीनस सोसाइटी, वर्ली—सी फेस, वर्ली बम्बई-४०००७८।
तृतीय पुरस्कार—सन्तोष कुमारी सुपुत्री वी० भालेराम, सहायक कृषि निदेशक, डी० डी० ए०, सोनीपत, (हरियाणा)।

कैमल आश्वासन इनाम

१. दीपक वर्मा—जयपुर। २. सतोश कुमार मित्तल-रोहतक। ३. कुमारी मलानी देवी भाया—तेलीवाड़ा, रायपुर। ४. कमर हुसैन—लखनऊ। ५. विक्रम जीतसिंह मोधी—संगरूर।

दीवाना आश्वासन इनाम

१. प्रदीप जे० एन०—सिकन्द्राबाद
२. जय प्रकाश टी० के०—थाना (बम्बई)।
३. कुमारी अलका रानीधीर—हिसार।
४. राजू भाखानी—ब्यावर (राज)।
५. नरेश प्रसाद श्रेष्ठ—काठमाण्डू।

सर्टीफिकेट

१. कंडे जोपर मवासी—रतलाम। २. अनिता कुमारी—रांची। ३. टिंकू-दिल्ली ४. अलका कुमारी नवल—दिल्ली। ५. सुबिने बोस—रायपुर। ६. राजिन्दर चोपड़ा—जालन्धर। ७. बिराट कुमार शर्मा—बम्बई। ८. योगेन्द्र उप्रेती—रुद्रपुर, (नैनीताल)। ९. बीरसिंह—जमशेदपुर। १०. मास्टर नानू मानूडे बंकापुर, मुंगेर।

पृष्ठ ३६ से आगे

लेकिन विनोद दूसरे ही क्षण दरवाजे से बाहर था—फूलवती के होंठों पर जहरीली मुस्कराहट रेंग गई।

अपने कमरे में लेटकर विनोद ने सोचा—वह बहुत बड़ी भूल करने वाला था—बिल्कुल समय पर भगवान् ने उसे बचा लिया···वरना एक बार गिरकर वह कभी न उठ पाता···यह औरत जीवन भर उसका लहू चूसती रहती···उसका सारा भविष्य इसके अधिकार में···इसकी मुट्ठी में होता।

दूसरी सुबह विनोद बहुत जल्दी उठ गया—फूलवती अभी तक सो रही थी—वह उसके जागने तक वहां नहीं ठहरना चाहता था···वह फूलवती से दृष्टि मिलाने का साहस नहीं कर पा रहा था···उसकी आत्मा रात की घटना पर उसे धिक्कार रही थी···वह क्यों भटक गया था ? उसके पैर क्यों डगामगा गए थे ? उसे जाने क्या हो गया था—उसने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और नाश्ता करके घर से निकल गया। कालिज में एक्स्ट्रा क्लासें चल रही थीं—लेकिन उसने सोचा क्लास में जाना ही व्यर्थ है···जब परीक्षा में ही नहीं बैठना तो क्लास में जाने से लाभ ? पर अगर क्लास में न जाए तो क्या करे ? और कहां जाए ?···उसके पांव स्वयं कालिज की ओर उठने लगे—एक बजे के लगभग क्लास समाप्त हुई और वह घर की ओर चल दिया।

घर के दरवाजे पर पहुंचते ही वह ठिठककर रुक गया—घर में पूर्ण रूप से सन्नाटा था—केवल उसी की मां कमरे में पलंग पर लेटी सिसक-सिसककर रो रही थी—वह हैरान रह गया—पास पहुंचकर उसने धीरे से पुकारा—

'मां—'

मां ने चौंककर विनोद की ओर देखा और धीरे-से पूछा—

'फीस जमा कर आए ?'

'कैसी फीस—? रुपए कहां थे ?'

'फूलवती के सन्दूक से जो रुपये तुमने रात चुराये थे।'

'मां !' विनोद चीख पड़ा, 'यह आप क्या कर रही हैं ?'

'मैं नहीं कह रही हूं···फूलवती कह रही है।' मां ने कहा और सिर पर हाथ रखकर रोने लगी।

विनोद को ऐसे लगा जैसे वह बड़ी तेजी से जमीन में धंसा जा रहा हो—दोनों दीवारें तेजी से चलती हुई एक दूसरे के पास आ रही हों और वह इन दीवारों के शिकंजे में फंस गया हो—वह बड़ी देर तक वहीं स्तब्ध सा खड़ा रहा···फिर लड़खड़ाते कदमों से अपने कमरे की ओर बढ़ा और बिस्तर पर गिर पड़ा।

फूलवती ने आवाज सुनते ही चिल्लाना शुरू कर दिया—

'अरे रुपयों की जरूरत थी तो मुझसे मांग लिए होते—चुराने की क्या आवश्यकता थी—मैं तो पहले ही समझती थी कि मेरा रुपया इन लोगों की नजरों में खटकता है—अपने पास नहीं तो दूसरों के पास कैसे देख सकते हैं ? जलते हैं—हाय ! कितने परिश्रम से कमाते हैं—रातों को जाग-जागकर दवाईयां बनाते हैं—और चुरानेवाले यह समझते हैं जैसे हराम का पैसा है—।'

पता नहीं वह क्या-क्या कहे जा रही थी···विनोद इस प्रकार लेटा था जैसे स्वयं कभी नहीं उठ पाएगा—उसके हाथ-पांव में जैसे प्राण न रहे हों—वह निष्क्रिय हो गए हों—बाहर मां के साथ उसकी दोनों बहनों के रोने की भी आवाज आ रही थी—और कमल सोच रहा था, 'उसके इतने अच्छे भैया क्या चोर भी हो सकते हैं ?'

एक घंटे बाद विनोद कमरे से निकला···बड़े कमरे में भी नहीं ठहरा···आंगन में भी नहीं रुका···घर से बाहर निकलता चला

गया···उसे किसी ने रोका-टोका भी नहीं···शायद आधा घंटा गुजरा होगा कि किसी ने दरवाजे पर विनोद को आवाज दी···।

'देखना कमल···।' मां ने आंसू पोंछते हुए कहा।

कमल ने देखा कि दरवाजे पर कोई अजनबी खड़ा उसको पूछ रहा था। कमल ने बताया कि भैया घर पर नहीं थे। अजनबी ने एक लिफाफा उसे थमाते हुए कहा—

'अच्छा···उन्हें आते ही यह लिफाफा दे देना।'

कमल ने लिफाफा ले लिया और मेज पर धर दिया···आज दिन भर घर का वातावरण शोकमयी रहा···मां रोती रही और फूलवती रह-रहकर ताने देती रही। उसने ऊंची आवाज में कहा—

'चोर विनोद है—उसने फीस के लिए रुपए चुराए हैं—।'

ठीक साढ़े चार बजे पिताजी हांफते हुए घर में पहुंचे···मां तब तक चुप हो चुकी थी। उन्होंने कमल से पूछा—

'विनोद कमरे में है ?'

'नहीं, कहीं चले गये हैं।'

'कहां चला गया गधा···फीस जमा होने में केवल एक घंटा रह गया है···मैं रुपये लेकर बड़ी तेजी से भागा-भागा आया हूं···सांस भी फूल गई है।'

'फीस कहां से आई ?' मां ने आश्चर्य से पूछा।

'आई कहां से···गाढ़े पसीने की कमाई है···' पिताजी ने कुछ गर्व से कहा, 'तीन जगह खाता लिखता हूं सत्तर-सत्तर रुपए महीना पर—रुपये तो रात को ही मिल जाते लेकिन काम अधिक था···फिर मालिक दुकान पर से चला गया···मैं अन्दर काम कर रहा था···मैंने दूसरी दो दुकानों से भी पहले नहीं लिए थे·······यह सोचकर इकट्ठे लूंगा।'—फिर वह क्षण भर रुककर बोले, 'मुझे फिर जाना है—काम छोड़कर भागा हूं···ये रुपया विनोद की मेज पर रखे जा रहा हूं···उसे आते ही बता देना।'

यह कहकर वह जल्दी-जल्दी विनोद के कमरे में आए···मेज पर रुपए रखते हुए उनकी दृष्टि उस लिफाफे पर पड़ी जो कोई अजनबी कमल को दे गया था और उसने भैया की मेज पर रख दिया था।

शेष आगामी अंक में

सवाल यह है ?

क्या इनका भी कोई जवाब है ?

पिछले दिनों पूर्ण नशाबन्दी के पक्ष में एक फ़िल्म बनी. और एक बहुत बड़े नेता ने फिल्म का उद्घाटन किया.

फ़िल्म में शराब को मौत के नाम से पुकारा गया.
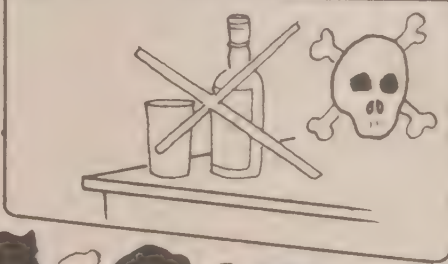
शराब पीने का नतीजा बताया गया.

यह बताया गया कि मोरार जी ने क्या पीने की सलाह दी है.

फ़िल्म के बाद नेताओं और मेहमानों को कॉकटेल पार्टी दी गई

पार्टी के बाद सब की हालत यह थी. इस बात पर आप तालियां बजाईये और इन सब के मुँह से मक्खियां उड़ाईये.
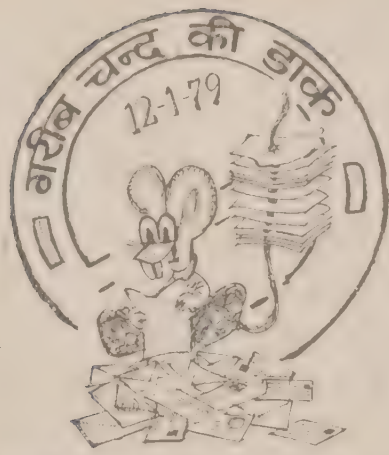
केवल प्रकाश—काशीपुर : दूसरों का माल कुतर कर आप कैसा अनुभव करते हैं ?

उ० : जैसे दुल्हे के बाप को दहेज पर हाथ साफ करके अनुभव होता है।

प्र० : मुझ को २, ३ लड़कियों से इश्क याने प्यार हो गया है छुटकारा पाने का इलाज बताइये प्यारे गरीबचन्द जी ?

उ० : आप एक दिन उन तीनों का परिचय एक दूसरे से करा दीजिये और खुद उसके बाद हनुमान चालीसा का जाप करें अगर मौका मिला तो।

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर : माई डीयर-डीयर चूहेराम केवल पत्रों के उत्तर ही देते हो या उन्हें कुतरने का भी करते हो काम ?

उ० : शायद यह आपका पहला पत्र है वर्ना आपको पता लग गया होता कि कितने पत्र मेरी कुतरन विद्या के चरणों की भेंट हो जाते हैं।

कृष्ण देव पाण्डेय—दानापुर : प्यारे गरीब-चन्द मेरे घर में चूहों ने तबाही मचा रखी है। कृपया इनसे छुटकारा पाने का उपाय बताइये ?

उ० : मैं आपके घर के चूहों की जवाब तलबी ले रहा हूं उनकी काम चोरी के लिये। उन्होंने आपका पेन कैसे साबुत छोड़ दिया जो आप पत्र लिखने लायक रहे ?

राजकुमारी, धर्मेन्द्र दुर्गा—रायपुर : गरीब चन्द जी मुझे एक साधू बाबा ने कहा था कि गरीब चन्द नाम के चूहे के बाल से तुम लखपति बन सकते हो। क्या आप अपनी मूंछ के बाल मेरे पास भेजेंगे ?

उ० : छः मूंछों के बाल कुल मेरे पास हैं अब किस-किसको दूं ? आजकल जो उप चुनाव होते हैं उनमें भी जनता पार्टी और कांग्रेस आई के उम्मीदवार मेरे ही बाल लेकर चुनाव लड़ते हैं। मोरार जी देसाई, इन्दिरा गांधी और जिमी कार्टर वगैरह सब मेरी मूंछों के बालों के पीछे पड़े हैं। आप भी क्यू में लग जाइये। आठ-दस साल बाद बारी आ ही जायेगी।

राजा, रजनी, चंचल—जमशेदपुर : गरीब चन्द जी जन प्रिय नेता राज नारायण तथा आपके दोस्त श्री सिलबिल-पिलपिल में क्या फर्क है।

उ० : बस यही फर्क है कि राजनारायण के कॉमिक्स रोज अखबारों में छपते हैं जब कि सिलबिल-पिलपिल सप्ताह में केवल एक बार छपते हैं।

एस० एस० आलमगीर—हजारीबाग : गरीब चन्द जी, क्या इन्सानों की तरह जानवर भी बे-ईमान होते हैं।

उ० : नहीं साहब बेईमानी पर इंसानों का कॉपी राइट है। जानवर क्रूर हो सकता है लेकिन बेईमान नहीं।

रामस्वरूप साव—झरिया : "गरीब चन्द जी ये बताइये दोस्ती में कुस्ती कब होती है।"

उ० : जब दोस्ती दारा सिंह से हो जाये।

राकेश झा—बिलासपुर : अगर आप सभी प्रश्नों पर पुरस्कार देने लगें, तो दीवाना पर क्या असर होगा ?

उ० : हमें आपने क्या इतना मूर्ख समझ रखा है ? हम क्यों अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने लगे।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

टी. वी. पर विज्ञापनों के साथ वस्तु की कीमत न बताना कहां तक उचित है।

पृष्ठ ३४ का शेष

उपयोग की जाती है और स्टेथोस्कोप का आविष्कार किसने किया था।'

'यह तो हमें भी पता नहीं।'

'सारा संसार जानता है। हीलियम एक हल्की गैस है, जिसे रोगी को बेहोश करने के लिए उपयोग किया जाता है और स्टेथोस्कोप...'

'बहरहाल तुम्हें ऐसे सवाल अध्यापकगण से पूछने की जरूरत नहीं। भविष्य में जो भी चाहो, हमसे पूछ लो।'

कहने को तो हमने कह दिया, लेकिन अच्छी-खासी मुसीबत मोल ले ली। अब मुन्ना हर रोज हम पर जिरह करने लगा ऐसा क्यों होता है ? ऐसा क्यों नहीं होता फलां देश का क्षेत्र कितना है ? फलां शहर की आबादी कितनी है ? शुरू में हमने उसके सवालों के गलत-सलत जवाब देने का प्रयत्न किया; लेकिन जब उसने हर जवाब का मजाक उड़ाया, तो हमने एक नया तरीका अपनाया। उदाहरण के रूप में, उसने पूछा 'संसार की जनसंख्या कितनी है ?'

'हमें मालूम नहीं। कोई और सवाल पूछो।'

'संसार की सबसे बड़ी झील का क्या नाम है ?

'भगवान जाने क्या है। कोई और सवाल करो।'

'उमर खय्याम को उमर खय्याम क्यों कहते हैं ?'

'पता नहीं। अगला सवाल पूछो।

'कुतुब-उद-दीन-ऐबक का निधन किस वर्ष में हुआ ?'

'यह भी मालूम नहीं। इससे अगला सवाल पूछो।'

'पोलैंड की राजधानी क्या है बताइये ?'

'पोलैंड की राजधानी है वह यानी...अच्छा अब जाओ, खेलो कूदो। बाकी सवाल कल पूछ लेना।'

हमने समझा, यह चाल चलकर हमने मुन्ने को निरुत्तर कर दिया है, लेकिन हमारे आश्चर्य की कोई सीमा न रही जब हमने मुन्ने को एक दिन अपने दोस्तों से यह कहते हुए सुना, 'साहब, अजीब मुसीबत है। कोई करे तो क्या करे। विद्वता का तो मानो जनाजा ही निकल गया है। माता-पिता तो जाहिल हैं ही, अध्यापक उनसे भी जाहिल अब कोई किससे शिक्षा प्राप्त करें। पढ़ाने वाले ही लद गये। ●

अजय कुमार, बी०-५१४, सरोजनी नगर, नई दिल्ली, १० वर्ष, क्रिकेट खेलना, फुटबाल खेलना, हाकी खेलना, उपन्यास पढ़ना।

अशोक कुमार आबुवाला, न्यू अलीपुर, कलकत्ता, १७ वर्ष, पत्रिकायें पढ़ना, बड़े-छोटे का आदर करना, देश-विदेश में घूमना।

ओमप्रकाश टमटा, जी-६, आकाशवाणी, आल इण्डिया रेडियो, खामपुर, दिल्ली, २५ वर्ष, मित्रता करना, घूमना, चित्रकारी करना।

रसीक सरवैया, रसीक टी० स्टाल, गोल बाजार, रायपुर (म० प्र०), २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, माता-पिता की सेवा करना।

रविन्द्र कुमार धीगरा, मकान नं० २८/११० बिन्दुपुरी, हलद्वानी (नैनीताल), १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, पत्रिका पढ़ना।
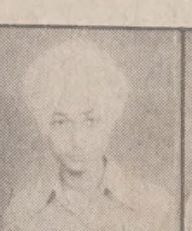
दलजीत सिंह, सिन्धु रोड, बस्ती नं० १०, मकान नं० २१, इन्दौर, १६ वर्ष, टी.वी. देखना, सिनेमा देखना, दौड़ में भाग लेना।

राजेश कुमार एस. १७/२७१ नदेसर वाराणसी, १५ वर्ष, देश-विदेश के लड़कों से पत्र-मित्रता करना, डाक-टिकट संग्रह।
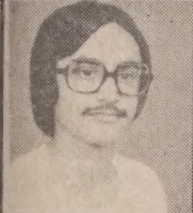
विकास 'घायल' द्वारा जगदीश जनरल स्टोर्स, चर्च के पास, बैरन बाजार, रायपुर (मध्य प्रदेश), २० वर्ष, पत्र-मित्रता तथा सैर करना।
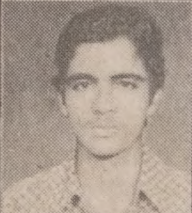
सत्येन्द्र कुमार सिंह, डाक्टर महमूद चौक, दहियावां (छपरा), १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, फिल्म देखना, टिकट संग्रह करना।

प्रवीन होतवानी, प्रकाश वनाथ स्टोर्स, गोल बाजार, रायपुर (म० प्र०), २० वर्ष पत्र-मित्रता करना, दूसरों की सेवा करना।

ओमदत्त शर्मा, मथुरा दरवाजा कामां १३ वर्ष, क्रिकेट खेलना, पढ़ना, मोटर कार में सैर करना, आपस में दोस्ती बढ़ाना।

रबीन्द्र मुनी बज्राचार्य, ५/७७ भोंछे न्हूमाल, नेपाल, १४ वर्ष, शतरंज खेलना, गाना गाना, सुबह को टहलना तथा सेहत बनाना।

सुरेन्द्र सिंह ग्रोवर, मकान नम्बर ७, गोपाल पार्क, दिल्ली, २४ वर्ष, मित्रता करना, घूमना, व्यायाम करना।

जगदीश कुमार, जी०-१६, प्रिन्सिज पार्क होस्टल, नई दिल्ली, २३ वर्ष गाना-बजाना, फुटबाल खेलना तथा परिश्रम करना।

विजय कुमार गावरी, फाफाडी बाबा /५६२ गली नम्बर १, रायपुर (म० प्र०), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, घूमना-फिरना।

सुनील एम० अग्रवाल, ११२/३३२६ पतनगर, घाटकोपर, बम्बई, १७ वर्ष पढ़ना, मित्रता करना, फालतू घूमना तथा दादागीरी दिखाना।

हरचरन सिंह सिद्ध, हेम सिंह बगान टाटा, १६ वर्ष, फिल्म एक्टिंग करना, पढ़ना, गाना सुनना, दोस्ती को बढ़ावा देना, सेवा करना।

दिनेश कुमार शर्मा, डी०-५८, मोती बाग-१, नई दिल्ली, १४ वर्ष, डाक-टिकट संग्रह, गाने गाना, दोस्तों के साथ मजाक करना।

चौधरी निरंजन प्रसाद, क्वार्टर नं० ४, रो० नं० ५ क्वार्टर कालोनी, बोकारो स्टील सिटी, धनबाद (बिहार), १७ वर्ष, जासूसी करना।

बद्री प्रसाद भागवत २२६/१ नई बस्ती किशनगंज, दिल्ली २२ वर्ष, पत्र-मित्रता के शौकीन भाइयों के नाम की सूची बनाना।

जगदीश मैथ्यू मार्फत जगदीश जनरल स्टोर्स बैरन बाजार, रायपुर (म० प्र०), २२ वर्ष, हसना-हसाना, कलाकारी करना।

मुरली मनोहर शर्मा रामसागर, चना मण्डी रायपुर (म० प्र०), १७ वर्ष फिल्म देखना, दीवाना पढ़ना और खुश रहना।

देवेन्द्र कुमार गुप्ता, ६३१, त्रिनगर, दिल्ली, २० वर्ष, कार, स्कूटर रखने वालों से और आधुनिक युवतियों से पत्र-मित्रता करना।

कुन्दन कुमार शर्मा, ७ ए, रेलवे कालोनी, फतेहपुर, (यू० पी०), १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, शायरी लिखना, बिनाका प्रोग्राम सुनना।

योगेन्द्र राज बज्राचार्य, ५/७७, भोंछे हूमाल, काठमाडो, नेपाल, २२ वर्ष, पत्र-मित्रता, उपन्यास पढ़ना, फिल्म देखना, डाक भेजना।

अजित बाबू ओसवाल, लोढ़ा, फाटक गली लहार, जिला भिण्ड, (म० प्र०), १७ वर्ष, पत्र मित्रता करना, टेलीफोन करना।

इन्द्र कुमार सक्सेना, प्रकाश लाल, १८१ स्टोर, गोल बाजार रायपुर, (म० प्र०), २० वर्ष, पत्र मित्रता, माता-पिता की सेवा करना।

नौशेर दिल अन्सारी, इकबाल अहमद अन्सारी, सिविल अस्पताल रोड, रुड़की, १४ वर्ष, पढ़ना, लिखना, गरीबों की मदद करना।

फरहान अहमद, चाक अरबी मदरसा, सहारनपुर, ११ वर्ष, दीवाना पढ़ना क्रिकेट खेलना, टी० वी० पर टेलीमैच देखना।

बिनोद कुमार रूपरेला, मकान नं० ८/८६३ फाफाडीह रायपुर, (म० प्र०) १६ वर्ष पत्र-मित्रता, दीवाना पढ़ना और हसना।

पी० एम० शाक्य, ३-७, नाग बहाल ललितपुर, नेपाल), १६ वर्ष, पत्र मित्रता करना कहानी व दीवाना पढ़ना, स्वीमिंग करना।

आबिद हुसैन, किसमिस्दा हाउस (ममाना कलाम), मसूरी, १८ वर्ष, गरीबों की सहायता करना, दोस्ती करना, फिल्म देखना।
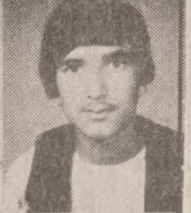
किरण प्रताप के० सी०, २६/६५२ मामाखुसी, ठमेल काठमाडो, नेपाल १६ वर्ष, पत्र मित्रता करना, घूमना, लड़ना यात्रा करना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा।

हमारा पता : दीवाना फ्रेंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________

पता ____________

आयु ______ शौक ______

प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता

तर्क-कुतर्क

तर्क : एक्सीडेंट में मेरी नाक टूट गई।
कुतर्क : चलो अब उसके कटने का खतरा तो नहीं रहा।

तर्क : अंगूर दस रुपये किलो।
कुतर्क : जरूरी है दस रुपये की लेना ?

तर्क : खाली बातें क्यों चलाये जा रहा है ?
कुतर्क : पैट्रोल महंगा है। गाडी चलाने में बहुत खर्चा आता है।

तर्क—मुझे बस पकड़नी है।
कुतर्क—इतना बड़ा पिंजरा है तुम्हारे पास ?

तर्क—कल मेरी बीबी से लड़ाई हुई।
कुतर्क—और किसी से लड़ने की हिम्मत नहीं पड़ी ?

तर्क—और सुनाओ कैसे गुजर रहे हैं दिन।
कुतर्क—एक-एक करके ?

तर्क—वह मेरा दिल ले गयी।
कुतर्क—बगैर दिल के तुम क्या डायालिसिज से काम चला रहे हो ?

तर्क—मुझे एक आया की जरूरत है।
कुतर्क—गया से काम नहीं चलेगा ?

तर्क—समझ नहीं आता कि मैं क्या करू।
कुतर्क—आत्म-हत्या करके देख लो ?

तर्क—मैंने शराब पीनी छोड़ दी है।
कुतर्क—अब क्या शराब की जैली बनाकर खाते हो ?
तर्क—आज मुझे लड़की देखने जाना है।
कुतर्क—आज तक तुमने कोई लड़की नहीं देखी ?.
तर्क—मुझे पसीना आता है।
कुतर्क—मुझे एलजेब्रा आता है।

तर्क-कुतर्क
दीवाना साप्ताहिक
८-बी. बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

'यह फिल्म इण्डस्ट्री है। यहाँ बात का बतंगड़ बनते देर नहीं लगती।'

बिन्दिया गोस्वामी

●विजय भारद्वाज

बिन्दिया गोस्वामी का जन्म ६ जनवरी को बम्बई में हुआ था। फ़िल्मों में आने की प्रेरणा इन्हें जिनसे मिली उनका नाम है श्रीमती जया चक्रवर्ती (हेमा की मम्मी)।

एक नजर में देखने पर बिन्दिया काफी हद तक हेमा की हमशक्ल सी लगती हैं। लेकिन यह धोखा मात्र शक्ल-ओ-सूरत तक ही सीमित है। हेमा की तुलना में बिन्दिया अभी मीलों पीछे है। लेकिन यह दूरी बिन्दिया जल्दी तय कर लेगी ऐसा उनका दावा है।

बिन्दिया गोस्वामी की सर्वप्रथम फिल्म थी जीवन ज्योति लेकिन इस फिल्म से ज्यादा चर्चित यह अपनी दूसरी फिल्म मुक्ति से हुईं। इन दोनों ही फिल्मों के प्रदर्शन के बाद दर्शकों में बिन्दिया के प्रति अब जिज्ञासा जागृत हुई और देखते ही देखते बिन्दिया चर्चा का विषय बन गईं।

'चला मुरारी हीरो बनने' में यह नायिका बनीं और इन्होंने अपने अभिनय का एक बार फिर जोरदार प्रदर्शन किया। 'खट्टा-मीठा' 'कालेज गर्ल' की बिन्दिया आज भी दर्शकों के दिलों पर छायी हुई है।

आकर्षक व्यक्तित्व की मल्लिका बिंदिया से फिल्म 'आत्माराम' के सैट पर दो चार बातें हुईं तो पता चला कि वह वास्तव में उदार हृदय और मिलनसार नारी हैं।

आपकी शक्ल काफी हद तक हेमा मालिनी से मिलती है। आप मन ही मन अपनी तुलना हेमा से अवश्य करती होंगी, मैंने पूछा तो बिन्दिया मुस्करा उठीं, 'हेमा दीदी की मैं बहुत इज्जत क[रती हूं] और उससे भी ज्यादा उनकी म[म्मी की] जिन्होंने मुझे फिल्मों में प्रवेश दि[लाया]। वह मुझे अपनी बेटी के समान ही [मानती] हैं। रहा हेमा दीदी से तुलना का [सवाल] तो मैं यही कहूंगी कि हेमा दीदी मेरी [प्रेरणा] की एक धारा जरूर हैं। अभिनय द[ृष्टि से] मैं उनके समक्ष कुछ भी नहीं हूं। हेम[ा] नृत्यों में जानीमानी नर्तकी रही हैं मैं अभी नृत्य का पाठ ही पढ़ रही हूं। ऊंचा उठने के ख्वाब तो हर इन्सान [देखता] है, मैं भी देखती हूं। विचार कह[ीं] साकार होते हैं, अब देखना तो यह है[।']

'असरानी के साथ आपके रोमां[स की] खबरों में कितनी सच्चाई है ?'

हंस के बोल लेने को, मिलने जु[लने को] लोग प्यार समझ लें तो इसमें मे[रा क्या] कसूर है भला। और फिर प्यार वह[ां होता] है जहां प्रेमिका के एक होने की सम[्भावना] हो। असरानी पहले ही विवाहि[त हैं।'] बिंदिया ने बात को गोल किया तो मैं[ने] टोंका, 'हेमा भी तो धर्मेन्द्र से प्यार [करती] है और खुलकर इस प्यार की पुष्[टि] करती है जबकि धर्मेन्द्र भी न केवल [विवा]हित है अपितु बाल बच्चेदार इन्सान [है।']

'मैंने कहा ना हेमा दीदी का मैं [कभी] भी मुकाबला नहीं कर सकती।' औ[र यह] कह कर बिन्दिया सवाल के जवाब [को] पानी के साथ पी गई।

'सुना है विद्या सिन्हा से आपक[ी] नहीं बनती और राजतिलक के माम[ले में] आप दोनों में काफी मनमुटाव रह[ा।] यह भी पढ़ा है कि पीठ पीछे आप दो[नों एक] दूसरे की बुराई करती हैं।' मैंने ट[टोलना] चाहा।

मैं उस (विद्या) के बारे में कु[छ] नहीं कहूंगी। वह कहती है तो कहे[।] इन्सान की जैसी नेचर होती है वह [वैसा ही] करता है। यह फिल्म इण्डस्ट्री है, यहाँ [बात का] बतंगड़ बनते देर नहीं लगती। मैं तो [उसे] अपनी सहेली के समान समझती हूं [।] विद्या''और आगे बढ़ते-२ बिंदिया और मुस्करा उठीं। व्वॉय आ गय[ा।] मैं धन्यवाद कह कर उठ खड़ा हुआ[।]

६. कासा विला
खार, पालीरोड बम्बई-४०००[५२]

बॉबी

दीवाना

यह क्या ले आया बंसीलाल ? अखरोट रखने के लिए डिब्बा ले आया ।
यार गंगाराम तू भी रहा बुद्धू का बुद्धू ही। यह डिब्बा नहीं है, टी. वी. है । अब मैं रोज टेलीविजन देखा करूंगा । खूब मनोरंजन होगा ! देश-विदेश की बातें पता लगेंगी । खेल तमाशा नाच गाना देखूंगा ।

बंसी लाल चल अखरोट चुनने चलें मौसम आ गया ।

यार मुझे तंग मत किया कर। मैं टी. वी. देख रहा हूं, क्रि टैस्ट मैच चल रहा है ! चित्रहार है और फिल्में हैं । मेरे पास टायम कहाँ है अखरोट बीनने का ? तू चला गंवार कहीं का ।
अपना बंसी बिल्कुल बदल गया टी. वी. आने के बाद ।

अरे, अरे अब सूरज इस पहाड़ी के पीछे डूबने लगा है ? इसका मतलब सर्दियां आ गयीं ! टी. वी. के चक्कर में अखरोट बादाम राशन जमा करने की सुध ही नहीं रही ।

तीन दिन से भूखा हूं कुछ खाने को नहीं मिला ! यह टी. वी. बिक जाये तो कुछ अखरोट ही खरीद कर अपनी भूख बुझा लूं । ऐसी दुखदायी सर्दी कभी नहीं देखी— टी. वी. की ऐसी तैसी ।
शिक्षा—काम के समय मनोरंजन करने भूखों मरता है ।
FOR SALE